वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 6 बुधवार 3 जून 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

नीलाम खानों को जल्द परिचालन में लाना राज्य सरकार की प्राथमिकता: श्रीनिवास

संबंधित विभाग फेसिलिटेटर की भूमिका में आएं आगे

ऑक्शन खानों के परिचालन से निवेश, रोजगार और राजस्व में होगी बढ़ोतरी, वैध खनन को मिलेगा बढ़ावा

101 मेजर मिनरल ब्लॉकों की नीलामी के साथ ही माइनर मिनरल ब्लॉकों के ऑक्शन में भी राजस्थान देश में अग्रणी

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने कहा है कि ऑक्शन खानों को परिचालन में लाना राज्य सरकार की पहली प्राथमिकता है। इसके लिए आवश्यक औपचारिकताओं की पूर्ति कराकर संबंधित विभाग वैधानिक स्वीकृतियां जारी करने के कार्य में तेजी लाएं। उन्होंने कहा कि नीलाम खानों को जल्द परिचालन में लाने से केन्द्र सरकार से राज्य को प्रोत्साहन राशि की प्राप्ति, खनन क्षेत्र में निवेश, रोजगार और राजस्व के नए अवसर विकसित होने के साथ ही राज्य के बेशकीमती खनिजों का वैधानिक खनन आरंभ हो सकेगा। मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने मंगलवार को सचिवालय के चिंतन कक्ष में अन्तर्विभागीय बैठक की अध्यक्षता करते हुए यह निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य में 101 मेजर मिनरल ब्लॉकों की नीलामी के साथ ही माइनर मिनरल ब्लॉकों के ऑक्शन में भी राजस्थान देश में अग्रणी प्रदेश है। उन्होंने कहा कि वैधानिक स्वीकृति प्रदान करने वाली संस्थाओं को फेसिलिटेटर की भूमिका निभानी होगी। बैठक में जोधपुर और जयपुर नगर विकास न्यासों के कार्य क्षेत्र में पहले से ऑक्शन खानों में खनन कार्य आरंभ कराने व खनन क्षेत्र में खनिज गतिविधियां आरंभ कराने की संभावनाओं पर भी विचार किया गया।

खनिज परिवहन वाहनों में स्पीड गवर्नर लगाए जाएं

मुख्य सचिव श्रीनिवास ने स्टेट लेवल एनवायरमेंट इम्पेक्ट एसेसमेंट ऑथोरिटी सीया से ऑक्शन खानों को परिचालन में लाने के लिए पर्यावरण स्वीकृति जारी करने में तेजी लाने, आवश्यक औपचारिकताएं एक बार में ही पूरा कराने और टाइमलाइन बनाकर पर्यावरण स्वीकृतियां जारी कराने की आवश्यकता प्रतिपादित की। उन्होंने सीया से कहा कि वे सेक स्तर पर विचाराधीन प्रकरणों के निष्पादन में भी तेजी लाने के लिए समीक्षा करने के साथ ही मार्गदर्शन व सहयोगी की भूमिका निभाएं। मुख्य सचिव श्रीनिवास ने वन विभाग स्तर पर वन एनओसी, वाइल्ड लाइफ सेंचुरी, इकोलोजिकल संसेटिव जोन आदि से संबंधित आवश्यक सभी जानकारियां पोर्टल पर अपलोड कर उपलब्ध कराने और आवश्यक औपचारिकताओं की पूर्ति में सहयोगी की भूमिका निभाएं। उन्होंने डंपर आदि से आये दिन होने वाली दुर्घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए खनिज परिवहन वाहनों में अनिवार्य रुप से स्पीड गवर्नर लगाये जाने के निर्देश दिए। उन्होंने खनिज परिवहन वाहनों में व्हीकल ट्रेकिंग सिस्टम लगाने और उसे खान विभाग व परिवहन विभाग से इंटिग्रेड करने के निर्देश दिए।

ऑक्शन खानों को परिचालन में लाना बड़ी चुनौती

अतिरिक्त मुख्य सचिव माइंस एवं पेट्रोलियम अपर्णा अरोरा ने बताया कि खान विभाग के सामने ऑक्शन खानों को परिचालन में लाना बड़ी चुनौती है। ऑक्शन खानों को परिचालन में लाने के लिए पर्यावरण, राजस्व, वन सहित विभिन्न विभागों से आवश्यक अनुमतियां प्राप्त करनी होती है। आवश्यक अनुमतियों में देरी के चलते नीलाम खानों को परिचालन में लाने में देरी होती है और इससे खनन क्षेत्र में निवेश, खनिजों के वैधानिक खनन, रोजगार और राज्य सरकार का राजस्व प्रभावित होता है इसके साथ ही केन्द्र सरकार द्वारा भी ऑक्शन खानों को परिचालन में लाने के लिए प्रोत्साहन राशि दी जाती है। एसीएस अपर्णा अरोरा ने कहा कि आवश्यक अनुमतियां समय पर मिलने से नीलाम खाने परिचालन में आ सकेगी और इससे प्रदेश में स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर विकसित होंगे। बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव नगरीय विकास आलोक गुप्ता ने भी सुझाव दिए। प्रमुख सचिव परिवहन भवानी सिंह देथा ने बताया कि विभाग द्वारा इंटरसेप्टर के माध्यम से निर्धारित गति लिमिट से अधिक तेज चलने वाले वाहनों पर कार्रवाई करने और गति रेगुलेट करने के संबंध में जानकारी दी। बैठक में सीया के अध्यक्ष मुनीश गर्ग ने विश्वास दिलाया के सीया स्तर पर स्वीकृतियां जारी करने में और अधिक तेजी लाई जाएगी। बैठक में विशिष्ट सचिव माइंस नम्रता वृष्णि, एस.एस फॉरेस्ट सुदर्शन, सीया सदस्य सचिव विजय एन सहित संबंधित विभागों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने मंगलवार को सचिवालय के चिंतन कक्ष में अन्तर्विभागीय बैठक की अध्यक्षता करते हुए यह निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य में 101 मेजर मिनरल ब्लॉकों की नीलामी के साथ ही माइनर मिनरल ब्लॉकों के ऑक्शन में भी राजस्थान देश में अग्रणी प्रदेश है।

संस्कृति संस्कार शिविर से नैतिकता एवं संस्कारों का हुआ प्रसार

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्रमण संस्कृति संस्थान एवं श्री मुनिसुव्रतनाथ फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन मंदिर, महल योजना, जगतपुरा में आयोजित श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर का सफल समापन हर्षोल्लास और गौरवपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। मंदिर समिति के मंत्री शिव कुमार ने कहा कि शिविर का उद्देश्य बच्चों एवं युवाओं में नैतिक मूल्यों, भारतीय संस्कृति तथा मानवीय संवेदनाओं का विकास करना था। उन्होंने बताया कि शिविर के माध्यम से नई पीढ़ी को संस्कारवान बनाने की दिशा में सार्थक प्रयास किए गए हैं। शिविर के संयोजक नमन जैन, पिंकल श्रीमाल एवं इंदु कोड़ीवाल ने बताया कि शिविर के दौरान बच्चों सहित सभी शिविरार्थियों ने तत्त्वार्थ सूत्र, द्रव्य संग्रह एवं श्रमण संस्कार जैसे महत्वपूर्ण धार्मिक विषयों का अध्ययन किया। इसके साथ ही आचार्य विद्यासागर महाराज द्वारा रचित हाइकू लेखन गतिविधि में बालकों एवं युवाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता कर अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया। शिविर का संचालन डॉ. निर्मला सांघी के कुशल निर्देशन में किया गया, जिनके मार्गदर्शन में दैनिक कक्षाएं नियमित एवं सुव्यवस्थित रूप से संचालित हुईं। शिविरार्थियों को धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्कारों से समृद्ध बनाने में स्थानीय विदुषी डॉ. प्रीति जैन एवं तोशी जैन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनके प्रेरणादायी अध्यापन तथा व्यावहारिक जीवन से जुड़े मार्गदर्शन से बच्चों एवं स्थानीय जैन समाज को विशेष लाभ प्राप्त हुआ। समन्वयक अभिषेक सांघी ने बताया कि सभी कार्यकर्ताओं, शिक्षकों एवं सहयोगियों के समर्पण, परिश्रम और सुव्यवस्थित प्रयासों के कारण शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। शिविर के माध्यम से प्रतिभागियों को ज्ञान, संस्कार और जीवनोपयोगी प्रेरणाएं प्राप्त हुईं, जो उनके व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध होंगी। समापन समारोह में उपस्थित समाजजनों ने शिविर की सराहना करते हुए भविष्य में भी ऐसे आयोजनों को निरंतर जारी रखने की आवश्यकता पर बल दिया।

धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर का समापन, प्रतिभावान शिविरार्थियों का हुआ सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन महासमिति, लालकोठी इकाई (एवरेस्ट कॉलोनी, जयपुर) द्वारा 17 मई से 26 मई तक आयोजित धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर का समापन समारोह एवं पारितोषिक वितरण कार्यक्रम रविवार, 31 मई को आयोजित किया गया। इकाई अध्यक्ष सतीश भौंच एवं मंत्री अशोक सौगानी ने बताया कि शिविर में लगभग 60 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर के दौरान संस्कार सरोवर भाग-1, भाग-2, भाग-3 तथा तत्त्वार्थ सूत्र विषयों का अध्ययन कराया गया। समापन अवसर पर आयोजित परीक्षा के परिणाम घोषित किए गए, जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि चेतन छाबड़ा एवं रेखा छाबड़ा द्वारा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। शिविर के सफल संचालन में योगदान देने वाले शिक्षकों संजय शास्त्री, मंजूलता छाबड़ा, डॉ. बिंदिया कासलीवाल एवं खुशबू कासलीवाल का भी उपहार भेंट कर सम्मान किया गया। साथ ही शिविर के दौरान प्रतिदिन सहयोग एवं उपहार प्रदान करने वाले सभी दानदाताओं एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन महिला प्रकोष्ठ मंत्री अलका जैन गोधा ने किया। समापन एवं पारितोषिक वितरण समारोह में महासमिति के पश्चिम संभाग अध्यक्ष निर्मल सांघी, कोषाध्यक्ष मनोज गोधा, लालकोठी जैन मंदिर के मंत्री प्रदीप जैन, उपाध्यक्ष डॉ. ज्ञानचंद सौगानी, प्रो. सतीश चंद्र जैन, पदमचंद भांवसा, सुनील गोदिका, रमेश ठोलिया, अनिल जैन (सीए), रोहित जैन सहित अनेक गणमान्य नागरिक एवं समाजजन उपस्थित रहे। महासमिति की लालकोठी इकाई के पदाधिकारियों ने समारोह में पधारे सभी अतिथियों का अभिनंदन एवं सम्मान किया। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित अतिथियों एवं समाजजनों के लिए अल्पाहार की व्यवस्था की गई।

श्रमण संस्थान के तत्वज्ञान शिविर का समापन, विद्यार्थियों का हुआ सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति एवं श्रमण संस्थान के सानिध्य में आयोजित 10 दिवसीय तत्वज्ञान शिविर का समापन समारोह 31 मई को दुगापुरा जैन मंदिर में आयोजित किया गया। समारोह के दौरान शिविर में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों का सम्मान एवं पारितोषिक वितरण किया गया।

त्रिशला संभाग की अध्यक्ष रेनू पांड्या एवं मंत्री छवि विनायक्या ने बताया कि 10 दिवसीय यह शिविर अत्यंत सुव्यवस्थित एवं सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। शिविर के दौरान तत्वार्थ सूत्र, छहढाला प्रथम भाग, छहढाला द्वितीय भाग तथा विभिन्न मौखिक कक्षाओं का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। उन्होंने बताया कि छहढाला विषय में आयोजित प्रतियोगिता में शिखा जैन ने रत्नाकर पुरस्कार प्राप्त कर जयपुर शहर में प्रथम स्थान हासिल किया। यह पुरस्कार विद्यार्थियों के लिए अत्यंत प्रतिष्ठित माना जाता है। महासमिति की संस्थापक अध्यक्ष चंदा सेठी ने बताया कि रत्नाकर पुरस्कार का वितरण श्रमण संस्थान में आयोजित समारोह के दौरान किया गया। इस अवसर पर महिला महासमिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष शीला ड्याडा, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष डॉ. वंदना जैन, राजस्थान अंचल की कोषाध्यक्ष विद्युत लुहारिया तथा धार्मिक मंत्री विनीता बोहरा सहित अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की सफलता में 10 दिवसीय शिविर की संयोजिकाओं सीमा सेठी, सुनीता पांड्या, संगीता काला, सुरबाला जैन, रजनी बोहरा एवं श्वेता कटारिया का विशेष योगदान रहा। समापन समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

जीव दया एवं सेवा भावना के तहत परिंदे-दाना पानी प्रोजेक्ट आयोजित

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन महावीर महिला मंडल द्वारा जीव दया एवं सेवा भावना के अंतर्गत बुधवार को जवाहर सर्किल पर पक्षियों के लिए ''परिंदे एवं दाना-पानी'' प्रोजेक्ट का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पक्षियों के लिए दाना और पानी की विशेष व्यवस्था कर पर्यावरण संरक्षण तथा जीवों के प्रति संवेदनशीलता का संदेश दिया गया। कार्यक्रम के दौरान मंडल की सदस्याओं ने पक्षियों के संरक्षण एवं सेवा को मानव जीवन का महत्वपूर्ण दायित्व बताते हुए आमजन से भी ऐसे प्रयासों में सहभागी बनने का आह्वान किया। इसके पश्चात मंडल की सदस्याएं दुर्गापुरा स्थित गौशाला पहुंचीं, जहां गौसेवा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान गायों को हरा चारा, लड्डू, घीया, मतीरा तथा गुड़ खिलाया गया। साथ ही गौशाला परिसर में पक्षियों के लिए भी दाना डालकर जीव दया का संदेश दिया गया। मंडल अध्यक्षा सुशीला छाबड़ा ने बताया कि जीव दया, पर्यावरण संरक्षण और सेवा कार्य जैन संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग हैं। उन्होंने कहा कि मंडल द्वारा समय-समय पर ऐसे सेवा एवं जनजागरण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं और भविष्य में भी यह अभियान निरंतर जारी रहेगा। इस अवसर पर मंडल की पदाधिकारी एवं सदस्याओं में किरण बेनाडा, वंदना छाबड़ा, सुनीता अजमेरा, विद्युत लुहाड़िया, बीना शाह, रीटा सेठी, साधना सेठी, कुमुद काला, निधि जैन, उर्मिला गोधा, डिंपल गोधा, किरण सेठी तथा कुसुमलता जैन सहित अनेक सदस्याएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ तथा जीवों के प्रति करुणा, सेवा और संरक्षण की भावना को बढ़ावा देने का संदेश दिया गया।

आठ दिवसीय बाल संस्कार शिविर का शानदार चौथा दिन, बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

नसीराबाद. शाबाश इंडिया। पूज्य सिंधी पंचायत एवं सिंधु सभा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित आठ दिवसीय बाल संस्कार शिविर का चौथा दिन उत्साह, उमंग और रचनात्मक गतिविधियों के साथ संपन्न हुआ। मौसम प्रतिकूल होने के बावजूद बच्चों के उत्साह में कोई कमी नहीं दिखाई दी। शिविर प्रभारी राजेश लहरवानी ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ माल्यार्पण, दीप प्रज्वलन एवं आरती के साथ हुआ। इसके पश्चात बच्चों को योगाभ्यास कराया गया तथा स्वस्थ जीवनशैली के महत्व की जानकारी दी गई। शिविर में ममता काकानी ने बच्चों को ब्रेड और दही से दही बड़े बनाने की विधि सिखाई। वहीं अंजलि तेजवानी ने बच्चों को सिंधी भजन ''आयो लाल झूलेलाल'' एवं ''लाल मंझी पत'' का अभ्यास कराया। गीता साधवानी ने बच्चों को सिंधी भाषा का ज्ञान देते हुए हिंदी वाक्यों का सिंधी में रूपांतरण, फलों, महीनों, सप्ताह के दिनों तथा सब्जियों के सिंधी नाम सिखाए। वर्षा कृपलानी ने बच्चों को नृत्य का अभ्यास करवाया तथा स्वस्थ रहने के विभिन्न उपायों की जानकारी दी। शिविर के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। मुखी काली बाबानी ने बताया कि भेलपुरी बनाने की प्रतियोगिता में लक्ष्मी ग्रुप प्रथम, सरस्वती ग्रुप द्वितीय तथा अमरलाल ग्रुप एवं संत कंवर राम ग्रुप तृतीय स्थान पर रहे। दही बड़ा प्रतियोगिता में झूलेलाल ग्रुप ने प्रथम, लीला शाह ग्रुप ने द्वितीय तथा गंगा ग्रुप एवं सरस्वती ग्रुप ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं चॉकलेट बॉल प्रतियोगिता में झूलेलाल ग्रुप प्रथम, लक्ष्मी ग्रुप द्वितीय तथा झांसी की रानी ग्रुप तृतीय स्थान पर रहा। उन्होंने बताया कि शिविर के सफल संचालन में गोप बाबानी, कुमार बाबानी, भागचंद राजानी, अशोक लोंगवानी, हरीश कृपलानी, किशन तिलोकानी, हरीश तिलोकानी, दीपू टेऊमल, पिंकू प्रताप राय, राजू संगतानी, किशोर चेलानी, वर्षा कृपलानी, गीता साधवानी, अंजलि तेजवानी, गोपी तेजवानी, ममता काकानी एवं मयंक साधवानी सहित अनेक कार्यकर्ताओं का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। शिविर में बच्चों के सर्वांगीण विकास, सांस्कृतिक शिक्षा एवं सिंधी भाषा के संरक्षण पर विशेष बल दिया जा रहा है।

चर्चा

क्या पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ बन पाएगी?

सौरभ वार्ष्णेय

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, लेकिन यह दर्जा आज भी संवैधानिक मान्यता से अधिक एक नैतिक और लोकतांत्रिक अवधारणा के रूप में मौजूद है। 30 मई को हिंदी पत्रकारिता दिवस बीत गया। हर वर्ष की तरह इस बार भी शुभकामनाओं और औपचारिक संदेशों का आदान-प्रदान हुआ, लेकिन एक महत्वपूर्ण प्रश्न फिर भी अनुत्तरित रह गया—क्या पत्रकारिता वास्तव में लोकतंत्र का सशक्त चौथा स्तंभ बन पाएगी, या यह केवल भाषणों और समारोहों तक सीमित एक उपाधि बनकर रह जाएगी? आज का समय सूचना क्रांति का युग है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने समाचारों के प्रसार को अभूतपूर्व गति प्रदान की है। जहां कभी समाचारों को लोगों तक पहुंचने में घंटों या दिनों का समय लगता था, वहीं आज कुछ ही सेकंड में कोई भी सूचना दुनिया के किसी भी कोने तक पहुंच जाती है। लेकिन इस तेजी के साथ एक गंभीर चुनौती भी सामने आई है—सत्य और असत्य के बीच अंतर करने की चुनौती। फेक न्यूज, भ्रामक सूचनाएं और आधी-अधूरी जानकारियां पत्रकारिता की विश्वसनीयता को प्रभावित कर रही हैं। पत्रकारिता का मूल उद्देश्य सत्ता से सवाल पूछना, जनता की आवाज बनना और जनहित की रक्षा करना है। किंतु वर्तमान समय में व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा, टीआरपी की दौड़ और राजनीतिक प्रभाव के कारण कई बार पत्रकारिता अपने मूल मूल्यों से भटकती दिखाई देती है। सनसनीखेज प्रस्तुतियों को प्राथमिकता मिल रही है, जबकि तथ्यपरक विश्लेषण और निष्पक्ष रिपोर्टिंग अपेक्षित महत्व नहीं पा रही है। यह स्थिति लोकतंत्र और समाज दोनों के लिए चिंता का विषय है। दूसरी ओर, जमीनी स्तर पर कार्य करने वाले पत्रकार अनेक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। सीमित संसाधनों में काम करते हुए वे जनसमस्याओं को उजागर करने का प्रयास करते हैं। कई बार उन्हें सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दबावों का सामना करना पड़ता है। दूरस्थ क्षेत्रों में कार्यरत संवाददाता प्रशासन और जनता के बीच महत्वपूर्ण सेतु की भूमिका निभाते हैं, लेकिन उनके योगदान को अक्सर उचित सम्मान और सुरक्षा नहीं मिल पाती। डिजिटल युग ने पत्रकारिता को नए अवसर भी दिए हैं।

संपादकीय

सपनों की उड़ान और शिक्षा व्यवस्था के लिए संदेश

संयुक्त प्रवेश परीक्षा एडवांस्ड (जेईई एडवांस्ड) 2026 के परिणाम घोषित हो चुके हैं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी) में प्रवेश का यह सबसे प्रतिष्ठित और चुनौतीपूर्ण मार्ग माना जाता है। इस वर्ष घोषित परिणामों में बिहार के गया जिले के शुभम कुमार ने अखिल भारतीय रैंक (एआईआर)-1 प्राप्त कर देशभर का ध्यान आकर्षित किया। उनकी सफलता ने एक बार फिर साबित किया है कि कठिन परिश्रम, अनुशासन

और सही रणनीति के बल पर बड़े से बड़ा लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। जेईई एडवांस्ड 2026 में लाखों विद्यार्थियों ने भाग लिया, लेकिन सीमित सीटों और कठिन प्रतिस्पर्धा के कारण केवल चुनिंदा छात्र ही सफलता प्राप्त कर सके। शुभम कुमार के साथ अन्य शीर्ष रैंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों ने भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। महिला अभ्यर्थियों की भागीदारी और सफलता में वृद्धि इस वर्ष का सकारात्मक पक्ष रही, जो तकनीकी शिक्षा में बढ़ती लैंगिक भागीदारी का संकेत देती है। शुभम कुमार की सफलता की कहानी विशेष रूप से प्रेरणादायक है। उन्होंने नियमित अध्ययन, समय प्रबंधन और मानसिक संतुलन को अपनी सफलता का आधार बताया। तैयारी के दौरान सोशल मीडिया से दूरी, पर्याप्त नींद और खेल गतिविधियों को महत्व देना उनकी रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा। यह संदेश उन विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है जो सफलता को केवल लंबे अध्ययन घंटों से जोड़कर देखते हैं। हालांकि, जेईई एडवांस्ड के परिणाम केवल सफल अभ्यर्थियों की उपलब्धियों की कहानी नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय शिक्षा व्यवस्था के सामने मौजूद चुनौतियों को भी उजागर करते हैं। हर वर्ष बड़ी संख्या में विद्यार्थी इस परीक्षा में असफल होते हैं, जिससे उन पर मानसिक और भावनात्मक दबाव बढ़ता है। विशेष रूप से कोटा जैसे कोचिंग केंद्रों में प्रतिस्पर्धा और अपेक्षाओं का बोझ कई छात्रों के लिए चिंता का कारण बन जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के विद्यार्थियों के सामने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कोचिंग तक पहुंच अभी भी एक बड़ी चुनौती है। सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएं और ऑनलाइन शिक्षा मंच अवसरों का विस्तार कर रहे हैं, लेकिन समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए अभी और प्रयासों की आवश्यकता है। जेईई एडवांस्ड के परिणाम हमें यह सोचने का अवसर भी देते हैं कि क्या हमारी स्कूली शिक्षा इतनी मजबूत है कि विद्यार्थी अत्यधिक कोचिंग पर निर्भर हुए बिना प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में सफल हो सकें। नई शिक्षा नीति 2020 समझ-आधारित और कौशल-केंद्रित शिक्षा पर बल देती है, लेकिन इसके प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में अभी लंबा रास्ता तय करना बाकी है। आज तकनीक आधारित क्षेत्रों जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कंप्यूटर विज्ञान और इलेक्ट्रॉनिक्स की मांग तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में केवल आईआईटी प्रवेश को सफलता का एकमात्र मानक मानना उचित नहीं होगा। देश को शोध, नवाचार, उद्यमिता, चिकित्सा, कृषि और कला सहित अनेक क्षेत्रों में प्रतिभाशाली युवाओं की आवश्यकता है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

स्वस्थ जीवन, स्वच्छ पर्यावरण

सुनील कुमार महला

प्रतिवर्ष 3 जून को विश्वभर में विश्व साइकिल दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 12 अप्रैल 2018 को एक प्रस्ताव पारित कर इस दिवस को आधिकारिक मान्यता प्रदान की थी। इस पहल को सफल बनाने में पोलैंड के सामाजिक वैज्ञानिक प्रोफेसर लेशेक सिबिल्स्की और उनके विद्यार्थियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने साइकिल को सतत विकास, स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण से जोड़ते हुए वैश्विक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाया, जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देशों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। विश्व साइकिल दिवस मनाने का उद्देश्य साइकिल को एक सरल, सस्ता, विश्वसनीय और पर्यावरण-अनुकूल परिवहन साधन के रूप में बढ़ावा देना है। यह दिवस लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, कार्बन उत्सर्जन कम करने और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है। साथ ही यह सड़क सुरक्षा, ऊर्जा संरक्षण और हरित भविष्य का भी संदेश देता है। साइकिल का इतिहास दो शताब्दियों से भी अधिक पुराना है। आधुनिक साइकिल के विकास की शुरूआत वर्ष 1817 में जर्मनी के आविष्कारक कार्ल वॉन ड्रैस द्वारा निर्मित ''ड्रैसिन'' से मानी जाती है। बाद में विभिन्न आविष्कारकों के योगदान से इसमें निरंतर सुधार हुए। वर्ष 1860 के दशक में फ्रांस में पैडलयुक्त साइकिलों का विकास हुआ, जबकि 1888 में जॉन बॉयड डनलप द्वारा हवा भरे रबर टायर के आविष्कार ने साइकिल यात्रा को अधिक आरामदायक और सुरक्षित बना दिया। इसके बाद साइकिल दुनिया भर में लोकप्रिय परिवहन साधन बन गई। आज साइकिल केवल यात्रा का साधन नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण का प्रतीक बन चुकी है। यह ईंधन की आवश्यकता नहीं रखती, इसलिए वायु प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग जैसी चुनौतियों के बीच साइकिल एक टिकाऊ और प्रभावी समाधान के रूप में उभर रही है। कोरोना महामारी के दौरान भी कई देशों में साइकिलों की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई थी। विश्व स्तर पर साइकिल की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। नीदरलैंड में जनसंख्या से अधिक साइकिलें हैं और वहां बड़ी संख्या में लोग दैनिक यात्राओं के लिए साइकिल का उपयोग करते हैं। यूरोप के कई देशों में ''साइकिल टू वर्क'' जैसी योजनाएं लागू हैं, जिनका उद्देश्य लोगों को पर्यावरण-अनुकूल परिवहन अपनाने के लिए प्रेरित करना है। भारत में भी साइकिल का सामाजिक और आर्थिक महत्व रहा है। लंबे समय तक यह ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में आम परिवहन साधन रही। किसान, विद्यार्थी, डाक कर्मचारी और छोटे व्यवसायी अपने दैनिक कार्यों के लिए साइकिल पर निर्भर रहते थे। आज भी अनेक क्षेत्रों में साइकिल लोगों के जीवन और आजीविका का महत्वपूर्ण हिस्सा है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार प्रतिदिन लगभग 30 मिनट साइकिल चलाने से हृदय मजबूत होता है, रक्त संचार बेहतर होता है तथा मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी समस्याओं का जोखिम कम होता है। यह मानसिक तनाव घटाने और शरीर की कार्यक्षमता बढ़ाने में भी सहायक है। हालांकि सुरक्षित साइकिल लेन, सड़क सुरक्षा और अनुकूल यातायात व्यवस्था की कमी जैसी चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं। इनके समाधान के लिए साइकिल-अनुकूल आधारभूत ढांचे का विकास और जन-जागरूकता आवश्यक है।

भीषण गर्मी में बेजुबान जीवों की रक्षा का संकल्प, परिंडा वितरण अभियान शुरू

जयपुर. शाबाश इंडिया। अखिल भारतीय दि जैन युवा परिषद् के 50वें स्वर्णिम स्थापना दिवस महोत्सव के अंतर्गत हेरिटेज संभाग गुलाबी नगरी द्वारा बंजो की नसियां, बदनपुरा स्थित जैन मंदिर परिसर में ''जियो और जीने दो'' की भावना के साथ ''आओ लगाएं नेकी का एक परिंडा'' अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक संजय शाह एवं सुशीला बज ने बताया कि भीषण गर्मी के दौरान बेजुबान पक्षियों को राहत पहुंचाने तथा जीव दया का संदेश देने के उद्देश्य से परिंडा वितरण अभियान प्रारंभ किया गया है। कार्यक्रम का शुभारंभ अंजना जैन द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति से हुआ। इसके पश्चात प्रदेश मंत्री विनोद पापड़ीवाल एवं पार्षद अनिता जैन ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया। हेरिटेज संभाग अध्यक्ष रूपेंद्र जैन ने बताया कि इस अवसर पर मंदिर परिसर में आयोजित धार्मिक शिक्षण शिविर के समापन पर शिविर में भाग लेने वाले सभी श्रावक-श्राविकाओं को युवा परिषद् की ओर से उपहार भेंट कर सम्मानित किया गया। इसके बाद उपस्थित समाजजनों को परिंडे वितरित किए गए तथा मंदिर परिसर एवं आसपास के क्षेत्रों में परिंडे बांधकर पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी लोगों ने बेजुबान पक्षियों और अन्य जीवों की रक्षा एवं सेवा का संकल्प लिया। परिषद् के पदाधिकारियों ने कहा कि जीव दया और पर्यावरण संरक्षण जैन धर्म की मूल भावना है तथा प्रत्येक व्यक्ति को इस दिशा में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। संतोष छाबड़ा ने जानकारी दी कि परिंडा वितरण अभियान 9 जून तक चारदीवारी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर निरंतर चलाया जाएगा, ताकि अधिक से अधिक लोगों को इस सेवा कार्य से जोड़ा जा सके। इस अवसर पर परिषद् के संरक्षक कमल दीवान, वरिष्ठ सलाहकार अजीत एवं इंदु सौगानी, मंत्री नरेश छाबड़ा सहित अनेक पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं समाजजन उपस्थित रहे।

श्रमण संस्कृति संस्कार शिविर का भव्य समापन

संस्कार और संस्कृति का अनुपम उत्सव

जयपुर. शाबाश इंडिया। परम पूज्य आचार्य चारित्र चक्रवर्ती 108 श्री शांतिसागर महाराज की अक्षुण्ण परंपरा एवं जिनवाणी की अनुकम्पा से श्री दिगंबर जैन मंदिर, संघी जी परिसर में आयोजित 11 दिवसीय श्रमण संस्कृति संस्कार शिविर एवं सायंकालीन धार्मिक पाठशाला का समापन समारोह 28 मई 2026 को भक्तिभाव एवं उत्साह के साथ संपन्न हुआ। समारोह का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने इसे मात्र एक शिविर का समापन नहीं, बल्कि भावी पीढ़ी के जीवन में सम्यक ज्ञान, दर्शन और चारित्र के संस्कारों के बीजारोपण का महापर्व बताया। शिविर में छहढाला, धार्मिक संस्कार, जिनवाणी अध्ययन एवं आगम ज्ञान की विभिन्न कक्षाओं का आयोजन किया गया। परीक्षा परिणामों में छहढाला वर्ग में मोना पाटनी प्रथम, सुनीला जैन द्वितीय एवं सुरभि बाकीवाला तृतीय स्थान पर रहीं। भाग-1 (मौखिक) में गीतांशी जैन प्रथम, गिनीशा जैन द्वितीय एवं निखर जैन तृतीय रहे। भाग-1 (लिखित) में पूर्वी जैन प्रथम, दिवी जैन द्वितीय एवं आत्मिक जैन तृतीय स्थान पर रहे। भाग-2 परीक्षा में भवी जैन प्रथम, डीलांशी जैन द्वितीय तथा लक्ष्य तृतीय स्थान पर रहे। शिविर के दौरान बच्चों ने धर्म, संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त किया। शिक्षक राज भैया, आयुषी जैन एवं खुशी जैन के मार्गदर्शन में बच्चों ने धार्मिक अध्ययन एवं संस्कारों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यक्रम में अल्पाहार, पूजा व्यवस्था एवं पुरस्कार वितरण में सहयोग करने वाले दानदाताओं एवं समाजसेवियों का विशेष सम्मान किया गया। आयोजन समिति ने सभी सहयोगियों, दानदाताओं, श्रावक-श्राविकाओं एवं कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया। प्रबंध व्यवस्था में प्रेमचंद भौंसा, विपिन कुमार बज, रवि प्रकाश बगड़ा, मनोज बगड़ा, मनोज बज, कल्याण जी तथा नितिन चांदवाड़ का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम के सफल संचालन में मोना पाटनी, सुनीला जैन, सोनम जैन, ममता संघी, सुलोचना चांदवाड़ एवं अंजू जैन मंगोड़ी वाले ने संयोजिका के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समापन अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि ऐसे संस्कार शिविर नई पीढ़ी को धर्म, संस्कृति और नैतिक मूल्यों से जोड़ने का सशक्त माध्यम हैं तथा समाज में सकारात्मक चेतना का संचार करते हैं।

एमआरजी चेस चैंपियनशिप 2026 का भव्य समापन, 61,000 रुपए की पुरस्कार राशि वितरित

जयपुर. शाबाश इंडिया। एमआरजी मल्टीस्पोर्ट्स क्लब द्वारा ब्राइट फ्यूचर स्कूल, जयपुर में आयोजित दो दिवसीय एमआरजी चेस चैंपियनशिप 2026 का रविवार को भव्य समापन हुआ। प्रतियोगिता में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपने उत्कृष्ट खेल कौशल का प्रदर्शन किया। समापन अवसर पर आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में जयपुर डिस्ट्रिक्ट चेस एसोसिएशन (जेडीसीए) की अध्यक्ष आशा भार्गव, सचिव जयेंद्र चतुर्वेदी, कोषाध्यक्ष मधु मेहता सहित एसोसिएशन के पदाधिकारी, अभिभावक एवं शतरंज प्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। आयोजन समिति ने बताया कि प्रतियोगिता के विभिन्न आयु वर्गों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को कुल 61,000 रुपए की नकद पुरस्कार राशि वितरित की गई। इसके साथ ही प्रत्येक वर्ग के शीर्ष 10 खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार, ट्रॉफी, मेडल एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। एमआरजी मल्टीस्पोर्ट्स क्लब की निदेशक डॉ. सोनिका गोदारा ने बताया कि प्रतियोगिता का उद्देश्य युवा खिलाड़ियों को प्रतिस्पर्धात्मक मंच उपलब्ध कराना तथा उन्हें राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करना है। उन्होंने आयोजन की सफलता के लिए सभी प्रतिभागियों, अभिभावकों, निर्णायकों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। प्रतियोगिता के प्रदर्शन के आधार पर कुल 8 खिलाड़ियों का चयन राज्य स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता में जयपुर जिले का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया गया है। अंडर-11 बालक वर्ग से रित्विक श्रीवास्तव एवं शौर्य गुप्ता, अंडर-11 बालिका वर्ग से श्रेयांशी जैन एवं तीशा ब्याडवाल, अंडर-13 बालक वर्ग से नील मिधा एवं जपनूर सिंह तथा अंडर-13 बालिका वर्ग से तीशा ब्याडवाल एवं आर्या जैमन का चयन किया गया है। प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों ने उच्च स्तरीय खेल का प्रदर्शन किया, जिससे दर्शकों और अभिभावकों में विशेष उत्साह देखने को मिला। आयोजन की सफलता ने जयपुर में शतरंज के बढ़ते स्तर और युवा खिलाड़ियों की प्रतिभा को एक बार फिर उजागर किया। साथ ही भविष्य में ऐसे और बड़े आयोजनों के लिए सकारात्मक संदेश भी दिया। समापन समारोह में विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई।

श्री दिगम्बर जैन पंचायत, ब्यावर की नई कार्यकारिणी घोषित

ब्यावर. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन पंचायत, ब्यावर की आम सभा में 24 मई 2026 को सर्वसम्मति से निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए सुशील कुमार बड़जात्या ने पंचायत की नई कार्यकारिणी की घोषणा की। चुनाव अधिकारी के निर्देशानुसार निर्धारित समयावधि में कार्यकारिणी का गठन कर इसकी औपचारिक घोषणा की गई। घोषित कार्यकारिणी में संजय कुमार राँवका को उपाध्यक्ष, रितेश फागीवाला को मंत्री, राकेश गोधा को सहमंत्री, संजय कुमार काला को कोषाध्यक्ष तथा महेन्द्र कुमार सोनी को उपकरण भंडारी का दायित्व सौंपा गया है। इसके अतिरिक्त कैलाश बड़जात्या, पदम सोनी, सुरेशचन्द्र बाकलीवाल, अनिल बाकलीवाल, प्रमोद बड़जात्या, जितेन्द्र ठोलिया एवं अंकुर अजमेरा को कार्यकारिणी सदस्य मनोनीत किया गया है। विशिष्ट आमंत्रित सदस्यों के रूप में रूपचंद कांटीवाल, जम्बूकुमार राँवका, लादूलाल कांटीवाल, प्रकाश गदिया, जिनेन्द्र कुमार बाकलीवाल, मुकेश कुमार जैन (वकील साहब) तथा पदमचंद पाटनी (कालू वाले) को शामिल किया गया है। नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुशील कुमार बड़जात्या ने सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पंचायत की धार्मिक, सामाजिक एवं जनहितकारी गतिविधियों को सभी के सहयोग से और अधिक प्रभावी तथा व्यापक रूप से संचालित किया जाएगा। उन्होंने समाज की एकता, संगठन और विकास के लिए मिलकर कार्य करने का आह्वान किया। नई कार्यकारिणी के गठन पर समाज के वरिष्ठजनों एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों ने सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए उनके सफल कार्यकाल की कामना की।

नेमिसागर कॉलोनी में श्रमण संस्कृति संस्कार शिविर का समापन

जयपुर. शाबाश इंडिया

नेमिसागर कॉलोनी में आयोजित 10 दिवसीय श्रमण संस्कृति संस्कार शिविर का समापन समारोह श्रद्धा, उत्साह एवं धार्मिक वातावरण के बीच संपन्न हुआ। यह शिविर सांगानेर स्थित श्रमण संस्कृति संस्थान द्वारा जैन श्रावकों एवं बालकों में धार्मिक संस्कारों के संवर्धन के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। शिविर में नेमिसागर कॉलोनी एवं आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में जैन श्रावक-श्राविकाओं तथा बच्चों ने सहभागिता कर धर्म, संस्कृति और संस्कारों का ज्ञान प्राप्त किया। समापन समारोह में श्रमण संस्कृति संस्थान के शिविर प्रभारी विनय भैया, सहप्रभारी दीपक भैया, शिक्षिका संजना दीदी, विदुषी दीदी सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन समाज समिति के अध्यक्ष जे.के. जैन कालाडेरा ने बताया कि शिविर के दौरान स्थापित किए गए पांच मंगल कलशों का निष्ठापन भी समारोहपूर्वक किया गया। श्री विद्यासागर कलश प्रदीप-अर्चना निगोतिया, श्री वर्धमानसागर कलश वीरेन्द्र-प्रेमलता गोधा, श्री सुधासागर कलश जे.के. जैन, श्री समयसागर कलश विजय-बीना जैन तथा श्री सुपार्श्वमति कलश पूनमचंद-अनिता ठोलिया द्वारा प्राप्त किए गए। समारोह में शिविर के सफल आयोजन में सहयोग देने वाले पुण्यार्जकों का भी सम्मान किया गया। इस अवसर पर सुभाष-लक्ष्मी बगड़ा, अनिल-बबीता जैन धुआंवाला तथा पुरस्कार पुण्यार्जक लेखराज-आभा जैन एवं सूरज-सीमा सेठी को सम्मानित किया गया। शिविर में आयोजित परीक्षाओं एवं प्रतियोगिताओं के परिणाम भी घोषित किए गए। वरिष्ठ वर्ग में विशाल जैन ने प्रथम, मधु जैन ने द्वितीय तथा सुनीता पहाड़िया ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं बाल वर्ग में विहान जैन प्रथम, वर्धिनी द्वितीय एवं माहिरा तृतीय स्थान पर रहीं। शिविर के संयोजक पूनमचंद ठोलिया, विजय जैन, मंजु सेठी एवं अर्चना निगोतिया रहे। समारोह के अंत में समिति के उपाध्यक्ष अनिल जैन ने सभी अतिथियों, सहयोगियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। समापन समारोह में धर्म, संस्कार और समाज सेवा के मूल्यों को जीवन में अपनाने का संदेश दिया गया।

लू एवं तापघात से बचाव और आपदा प्रबंधन पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

जयपुर. शाबाश इंडिया। भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सहयोग से पूर्णिमा यूनिवर्सिटी में ''हीट वेव प्रिपेयर्डनेस एंड मिटिगेशन'' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य लू (हीट वेव) और तापघात से बचाव, आपदा प्रबंधन तथा जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। कार्यशाला में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग जयपुर, मौसम विज्ञान केंद्र जयपुर, साउथ एशियन मेट्रोलॉजिकल संगठन, इंडियन मेट्रोलॉजिकल सोसायटी जयपुर, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के भू-भौतिकी विभाग, जेएनयू, खुशी बेबी एनजीओ, यूनिसेफ जयपुर, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन दल तथा पूर्णिमा यूनिवर्सिटी के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया। उद्घाटन समारोह में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, राजस्थान के अतिरिक्त निदेशक (चिकित्सा प्रशासन) एवं क्लाइमेट चेंज नोडल अधिकारी डॉ. नरोत्तम शर्मा मुख्य अतिथि रहे। इस अवसर पर उपनिदेशक डॉ. विकास शर्मा ने लू और तापघात के मानव शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव, बचाव के उपाय तथा चिकित्सा प्रबंधन की विस्तृत जानकारी दी। मौसम विज्ञान केंद्र जयपुर के निदेशक राधेश्याम शर्मा ने राजस्थान में हीट वेव की बढ़ती आवृत्ति एवं तीव्रता पर प्रकाश डालते हुए इसके प्रभावों और भविष्य की चुनौतियों पर चर्चा की। कार्यशाला में हीट एक्शन प्लान, प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, सामुदायिक भागीदारी तथा व्यावहारिक कूलिंग समाधानों जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी विचार-विमर्श किया गया। कार्यशाला के संयोजक डॉ. दिव्य प्रकाश ने बताया कि आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं विभिन्न विभागों के अधिकारियों को हीट वेव से बचाव और आपदा प्रबंधन के प्रति प्रशिक्षित करना है। पूर्णिमा यूनिवर्सिटी के प्रेसीडेंट डॉ. सुरेश चंद्र ने कहा कि वर्तमान समय में हीट वेव एक गंभीर चुनौती बन चुकी है और इसके प्रभावी समाधान के लिए शैक्षणिक संस्थानों, वैज्ञानिकों, नीति-निर्माताओं तथा समाज को मिलकर कार्य करना होगा। दो दिवसीय कार्यशाला के दौरान कुल आठ तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। इनमें जलवायु परिवर्तन, हीट वेव के स्वास्थ्य प्रभाव, शहरी ताप प्रबंधन तथा हीट वेव एक्शन प्लान जैसे विषयों पर विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए। तकनीकी सत्रों में डॉ. विकास शर्मा, डॉ. अरिंदम दास, गार्गी असोदरिया, डॉ. कृतिका कपूर, इंजीनियर साकेत कुमार तथा प्रोफेसर अश्विनी कुमार ने मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित किया। कार्यक्रम के अंत में भारत मौसम विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक हिमांशु शर्मा ने सभी प्रतिभागियों एवं अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

पावागढ़ सिद्धक्षेत्र में मिला परम सौभाग्य, आर्यिका श्री विनम्रमति माताजी की पावन पिच्छिका प्राप्त कर धन्य हुआ बड़जात्या परिवार

पावागढ़ (गुजरात). शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र पावागढ़ में आयोजित कल्पद्रुम विधान समापन एवं नवीन पिच्छिका परिवर्तन समारोह के अवसर पर कामवन निवासी शिखरचंद-संजय जैन बड़जात्या परिवार को एक दुर्लभ एवं पुण्यदायी आध्यात्मिक सौभाग्य प्राप्त हुआ। समारोह में आचार्य श्री 108 सुनील सागर महाराज के पावन सान्निध्य में प्रथम गणिनी समाधिस्थ आर्यिका रत्न श्री विजयमती माताजी की सुशिष्या आर्यिका श्री विनम्रमति माताजी की पुरानी पिच्छिका प्राप्त करने का सौभाग्य बड़जात्या परिवार को मिला। इस अवसर को परिवार ने अपने जीवन का अविस्मरणीय आध्यात्मिक क्षण बताया। आचार्य श्री के कर-कमलों से यह पावन पिच्छिका सुनीता जैन धर्मपत्नी शिखरचंद जैन, संजय जैन बड़जात्या, मनोज जैन, नीरज जैन, सुमतचंद जैन, संतोष देवी, संजना जैन एवं नैतिक जैन को प्रदान की गई। पिच्छिका प्राप्ति के दौरान परिवार के सभी सदस्य श्रद्धा, भक्ति और आत्मिक आनंद से अभिभूत नजर आए। जैन परंपरा में पिच्छिका का विशेष धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व माना जाता है। यह केवल एक धार्मिक उपकरण नहीं, बल्कि अहिंसा, संयम, करुणा और जीव-दया का प्रतीक है। दिगम्बर जैन साधु-साध्वियां चलते समय अथवा बैठने से पूर्व सूक्ष्म जीवों की रक्षा के लिए पिच्छिका का उपयोग करते हैं। इसी कारण किसी संत या आर्यिका की पिच्छिका प्राप्त होना अत्यंत दुर्लभ आध्यात्मिक सौभाग्य और अनमोल आशीर्वाद माना जाता है। समारोह में उपस्थित श्रद्धालुओं ने इस अवसर को गुरु कृपा और पूर्व संचित पुण्यों का प्रतिफल बताते हुए बड़जात्या परिवार को शुभकामनाएं दीं। श्रद्धालुओं का कहना था कि ऐसी पावन वस्तु की प्राप्ति व्यक्ति को धर्म, संयम और सेवा के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने कहा कि गुरु कृपा से प्राप्त पिच्छिका केवल एक स्मृति नहीं, बल्कि संयम, सेवा, साधना और अहिंसा के पथ पर निरंतर अग्रसर रहने की प्रेरणा है। यह पावन अवसर बड़जात्या परिवार के लिए जीवनभर संजोकर रखने योग्य आध्यात्मिक धरोहर बन गया।

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप की नि:शुल्क जल सेवा 18वें वर्ष में प्रवेश, सेवा के साथ स्वच्छता का भी संकल्प

गंगापुर सिटी. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप, गंगापुर सिटी द्वारा रेलवे स्टेशन पर संचालित नि:शुल्क जल सेवा अपने 18वें वर्ष में प्रवेश कर गई है। ''आपकी यात्रा, हमारी सेवा'' के संकल्प के साथ शुरू हुई यह सेवा आज हजारों रेल यात्रियों के लिए राहत और मानव सेवा का प्रेरणादायक उदाहरण बन चुकी है। ग्रुप द्वारा प्रतिदिन शाम 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक रेलवे स्टेशन पर शीतल जल वितरण किया जाता है। इस दौरान ग्रुप के सदस्य एवं उनके परिवारजन स्वयं उपस्थित रहकर यात्रियों की सेवा करते हैं। इसके अलावा दिनभर भी सेवादार जल सेवा की व्यवस्था संभालते हैं, जिससे यात्रियों को निरंतर शीतल पेयजल उपलब्ध हो सके। जल सेवा अभियान में 4 दर्जन से अधिक जल सेवक साथी, महिलाएं और बच्चे सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं। प्रतिदिन हजारों लीटर शीतल जल का वितरण किया जाता है,

जिससे बड़ी संख्या में रेल यात्रियों को भीषण गर्मी में राहत मिलती है। सेवा की विशेषता यह है कि जल वितरण के साथ-साथ ग्रुप के सदस्य रेलवे प्लेटफार्म की स्वच्छता का भी ध्यान रखते हैं। जल सेवक नियमित रूप से सफाई कार्य में सहयोग कर स्वच्छता का संदेश भी देते हैं। इस प्रकार यह अभियान केवल जल सेवा तक सीमित न रहकर सामाजिक जागरूकता का भी माध्यम बन गया है। ग्रुप के पदाधिकारियों ने बताया कि इस पुनीत कार्य में शहर के समाजसेवियों एवं विभिन्न वर्गों का निरंतर सहयोग प्राप्त हो रहा है। अध्यक्ष नरेंद्र जैन नृपत्या ने कहा कि मानव सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है और इसी भावना के साथ यह अभियान निरंतर संचालित किया जा रहा है। सचिव महेश जैन एवं कोषाध्यक्ष सुभाष जैन सोगानी के निर्देशन में चल रहे इस सेवा कार्य का संचालन जल सेवा संयोजक धर्मेंद्र जैन पांड्या तथा सहसंयोजक योगेंद्र जैन और दीपक गोयल के नेतृत्व में किया जा रहा है। सभी कार्यकर्ता सेवा भाव से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रहे हैं। ग्रुप ने शहरवासियों से भी इस जनसेवा अभियान में सहयोग करने और अधिकाधिक लोगों तक सेवा का संदेश पहुंचाने की अपील की है।

''भारतीय संस्कृति परिचायक सिक्के'' पुस्तक का विमोचन, इतिहास और संस्कृति का महत्वपूर्ण दस्तावेज

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान चैंबर भवन में आयोजित एक गरिमामय समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार एवं शिक्षाविद् डॉ. के.एल. जैन ने स्वर्गीय डॉ. नरेंद्र कुमार जैन द्वारा लिखित पुस्तक ''भारतीय संस्कृति परिचायक सिक्के'' का विमोचन किया। इस अवसर पर उनकी पुत्री एवं पुस्तक की प्रकाशिका डॉ. अंजना बैराठी ने अपने पिता की पुण्यतिथि पर पुस्तक का विमोचन कर उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम के संयोजक बसंत जैन बैराठी ने बताया कि पुस्तक में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक प्रचलित भारतीय सिक्कों का विस्तृत एवं प्रमाणिक विवरण प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने कहा कि सिक्के इतिहास के सबसे विश्वसनीय साक्ष्यों में से एक होते हैं, जिनमें किसी प्रकार की हेरफेर की संभावना नहीं होती। इसलिए यह पुस्तक भारतीय इतिहास, संस्कृति और मुद्रा विज्ञान के अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि एक पुत्री द्वारा अपने पिता के ज्ञान और शोध कार्य को पुस्तक के माध्यम से समाज तक पहुंचाना अनुकरणीय और प्रेरणादायी प्रयास है। यह पुस्तक न केवल लेखक की स्मृतियों को जीवित रखेगी, बल्कि शोधार्थियों और इतिहास प्रेमियों के लिए भी उपयोगी साबित होगी। समारोह में डॉ. के.एल. जैन ने कहा कि भारत में सिक्कों की परंपरा हजारों वर्षों से विभिन्न रूपों में चली आ रही है। समय-समय पर राजाओं, मुगल शासकों, ब्रिटिश शासन और स्वतंत्र भारत में जारी किए गए सिक्के देश के इतिहास

और सांस्कृतिक विकास की महत्वपूर्ण कहानी कहते हैं। इनका संकलन और व्यवस्थित परिचय प्रस्तुत करना अत्यंत सराहनीय कार्य है। पूर्व मंत्री एवं समाजसेवी राजीव अरोड़ा ने कहा कि यह पुस्तक आने वाली पीढ़ियों तथा इतिहास और संस्कृति में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में उपयोगी सिद्ध होगी। कार्यक्रम में लेखक की धर्मपत्नी सीता बैराठी, रमेश बैराठी, बेला बैराठी, एआरजी ग्रुप के चेयरमैन आत्माराम गुप्ता, जैन स्टडीज के पूर्व निदेशक डॉ. पी.सी. जैन, कार्यकारी अध्यक्ष आर.एस. जैमिनी, मानद महासचिव आनंद मेहरवाल, राजस्थान मुद्रा परिषद के अध्यक्ष राजेश कोठारी, गोपाल गुप्ता, डी.एस. भंडारी, जगदीश सोमानी, सुभाष गोयल, सुरेश सैनी, ज्ञानचंद झांझरी, विमल बज, मोनिका मेहरवाल, चांदनी जग्गा सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

गायत्री नगर में निःशुल्क डेंटल चेकअप कैंप संपन्न, बड़ी संख्या में लोगों ने ली परामर्श सेवाएं

जयपुर. शाबाश इंडिया

महारानी फार्म स्थित गायत्री नगर के श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में 'डेंटल क्लब' के तत्वावधान में एक दिवसीय निःशुल्क डेंटल चेकअप कैंप का सफल आयोजन किया गया। रविवार को आयोजित इस शिविर में क्षेत्र के बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लेकर अपने दांतों एवं मुख स्वास्थ्य की जांच करवाई तथा विशेषज्ञों से परामर्श प्राप्त किया। शिविर का आयोजन सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक किया गया।इस दौरान लोगों को दंत रोगों की जांच, उपचार संबंधी सलाह एवं ओरल हेल्थ के प्रति जागरूकता प्रदान की गई। प्रदीप बाकलीवाल ने बताया कि शिविर में प्रसिद्ध दंत रोग विशेषज्ञ डॉ. मिनाती जैन (एमडीएस, एंडोडॉन्टिक्स) एवं उनकी टीम ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं। चिकित्सकों द्वारा मरीजों का गहन परीक्षण कर उन्हें दांतों की सुरक्षा, नियमित देखभाल एवं स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इस अवसर पर डॉ. मिनाती जैन ने कहा कि बदलती जीवनशैली और खान-पान की आदतों के कारण लोगों में दांतों और मसूड़ों से संबंधित समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। ओरल हेल्थ की अनदेखी कई गंभीर बीमारियों का कारण बन सकती है। उन्होंने सभी से नियमित दंत जांच करवाने और मुख स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने की अपील की। शिविर में आए लोगों ने विशेषज्ञ चिकित्सकों से परामर्श प्राप्त कर लाभ उठाया तथा इस प्रकार के स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों की सराहना की। आयोजकों ने बताया कि भविष्य में भी जनहित में ऐसे स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाते रहेंगे, ताकि लोगों को विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाओं का लाभ मिल सके। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में दंत स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा लोगों को समय रहते दंत रोगों की पहचान एवं उपचार के लिए प्रेरित करना था।

गायत्री नगर की शुभा जैन को मिला रत्नाकर पुरस्कार

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर द्वारा आयोजित धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर में गायत्री नगर, महारानी फार्म निवासी श्रीमती शुभा जैन को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रतिष्ठित रत्नाकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। शिविर के दौरान द्रव्य संग्रह विषय की कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद सांगानेर में आयोजित परीक्षा में भी उत्कृष्ट सफलता अर्जित करने पर उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया। श्रीमती शुभा जैन, अधिवक्ता संदीप जैन की धर्मपत्नी तथा अशोक रांवका एवं अनीता रांवका की सुपुत्री हैं। श्रीमती शुभा जैन की इस उपलब्धि से गायत्री नगर, महारानी फार्म सहित समूचे जैन समाज में हर्ष का वातावरण है। उनकी सफलता को समाज के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि बताते हुए विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। समाजजनों ने विश्वास व्यक्त किया कि श्रीमती शुभा जैन भविष्य में भी धर्म, संस्कार एवं आध्यात्मिक अध्ययन के क्षेत्र में नई उपलब्धियां हासिल कर समाज का नाम रोशन करेंगी। उनकी इस उपलब्धि पर गायत्री नगर जैन समाज के साथ-साथ अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक संगठनों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएं की हैं।

“एआई फॉर वूमेन” अभियान बना महिलाओं के डिजिटल सशक्तिकरण की नई पहचान

जयपुर. शाबाश इंडिया

महिलाओं को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एवं आधुनिक डिजिटल तकनीकों से जोड़ने के उद्देश्य से वैश्य कम्युनिटी स्टार्टअप फाउंडेशन (वीसीएसएफ) द्वारा संचालित ''एआई फॉर वूमेन'' ऑनलाइन प्रशिक्षण अभियान देशभर की महिलाओं के लिए डिजिटल सशक्तिकरण का प्रभावी मंच बनकर उभर रहा है। इस विशेष अभियान के माध्यम से महिलाओं को चैटजीपीटी, एआई टूल्स, क्रिएटिव डिजाइनिंग, सोशल मीडिया कंटेंट निर्माण तथा वर्क फ्रॉम होम से संबंधित कौशलों का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं को नई तकनीकों से जोड़कर उन्हें आत्मनिर्भर एवं डिजिटल रूप से सशक्त बनाना है। संस्था के अनुसार इस नवाचारी पहल से देशभर की 3000 से अधिक महिलाएं जुड़ चुकी हैं। इनमें गृहिणियां, छात्राएं, माताएं तथा महिला उद्यमी शामिल हैं, जो उत्साहपूर्वक डिजिटल कौशल सीख रही हैं और तकनीक आधारित अवसरों को समझने का प्रयास कर रही हैं। कार्यक्रम को रोचक एवं प्रेरणादायक बनाने के लिए प्रतिदिन विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। इन गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को आकर्षक पुरस्कार भी प्रदान किए जा रहे हैं। 25 मई को आयोजित प्रतियोगिता में जयपुर की मनीषा जैन ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय तथा राजस्थान स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। संस्था के संगठन मंत्री प्रमोद जैन भंवर ने बताया कि आगामी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों के लिए विशेष बम्पर पुरस्कार के रूप में ताज होटल में एक रात्रि प्रवास का अवसर भी रखा गया है। इससे महिलाओं में सीखने और नई तकनीकों को अपनाने के प्रति उत्साह लगातार बढ़ रहा है। मुख्य संयोजक राखी जैन एवं अतीव जैन ने बताया कि वर्तमान समय में एआई और डिजिटल कौशल भविष्य की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में शामिल हैं। ऐसे में महिलाओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाना समय की मांग है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए यह अभियान संचालित किया जा रहा है। यह निःशुल्क ऑनलाइन प्रशिक्षण 25 मई से 27 मई 2026 तक प्रतिदिन दोपहर 3 बजे से 3:45 बजे तक आयोजित किया गया, जिसमें लाइव प्रैक्टिकल सत्र भी शामिल रहे। वीसीएसएफ टीम ने अधिक से अधिक महिलाओं से इस डिजिटल लर्निंग अभियान से जुड़ने का आह्वान किया है।

जेठ की तपती दोपहर में राहगीरों को वितरित की गई औषधीय कैरी की छाछ

जयपुर. शाबाश इंडिया। समाज सेवा एवं मानव कल्याण के क्षेत्र में सक्रिय कमला बाई चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित ''निवाला-एक कोशिश'' योजना के अंतर्गत भीषण गर्मी से राहत प्रदान करने के उद्देश्य से राहगीरों को कैरी की छाछ (आम पन्ना) का वितरण किया गया। ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने बताया कि संस्था पिछले 10 वर्षों से समाज सेवा और मानवहित के विभिन्न कार्यों में निरंतर सक्रिय भूमिका निभा रही है। संस्था की 'निवाला-एक कोशिश' योजना का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी व्यक्ति भूखा न सोए तथा जरूरतमंदों को समय-समय पर आवश्यक सहायता उपलब्ध कराई जा सके। इसी सेवा भावना के तहत मंगलवार, 26 मई को ज्येष्ठ मास की शुक्ल एकादशी (अधिक मास) के अवसर पर गांधी पथ वेस्ट, वैशाली नगर में राहगीरों के लिए विशेष रूप से कैरी की छाछ (आम पन्ना) वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। भीषण गर्मी के बीच बड़ी संख्या में लोगों ने इस शीतल एवं स्वास्थ्यवर्धक पेय का लाभ उठाया। संस्था के सदस्यों ने बताया कि कैरी की छाछ गर्मी और लू से बचाव के लिए अत्यंत लाभकारी मानी जाती है। इसका सेवन शरीर में ऊर्जा बनाए रखने के साथ-साथ गर्मी से राहत प्रदान करता है। इसी कारण इसे औषधीय पेय के रूप में राहगीरों को वितरित किया गया। कार्यक्रम के दौरान संस्था के कार्यकताओं ने सेवा भाव के साथ लोगों को आम पन्ना वितरित किया तथा मानव सेवा को सर्वोच्च धर्म बताते हुए समाज के अधिक से अधिक लोगों को ऐसे सेवा कार्यों से जुड़ने का आह्वान किया। संस्था ने भविष्य में भी मानवहित एवं जनकल्याण के लिए इसी प्रकार के सेवा कार्य निरंतर जारी रखने का संकल्प व्यक्त किया।

साहित्यकार अनिल माथुर सम्मानित

जोधपुर. शाबाश इंडिया। जोधपुर निवासी वरिष्ठ साहित्यकार एवं समाजसेवी अनिल माथुर को वैदिक साहित्य प्रकाशन, हरिद्वार द्वारा उत्कृष्ट साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान विभिन्न सामाजिक विषयों पर उल्लेखनीय एवं प्रभावशाली लेखन के लिए प्रदान किया गया। अनिल माथुर द्वारा 35 से अधिक सामाजिक एवं साहित्यिक पुस्तकों में विविध विषयों पर प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक एवं समाजोपयोगी लेख लिखे गए हैं। उनके लेखों में सामाजिक जागरूकता, नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक विरासत तथा जनहित से जुड़े विषयों को प्रमुखता से स्थान मिलता है। श्री माथुर विगत कई वर्षों से विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में नियमित रूप से लेखन कर रहे हैं। उनके लेख समाज में सकारात्मक सोच, नैतिक चेतना और जनजागरण का संदेश देने के लिए व्यापक रूप से सराहे जाते हैं। साहित्य और समाज सेवा के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए उन्हें देश-विदेश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक बार सम्मानित किया जा चुका है। उनके लेखन ने समाज के विभिन्न वर्गों को प्रेरित करने के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों को भी मजबूती प्रदान की है। इस सम्मान पर साहित्य, शिक्षा एवं समाज सेवा से जुड़े अनेक लोगों ने अनिल माथुर को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल एवं सतत साहित्यिक योगदान की सराहना की तथा भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

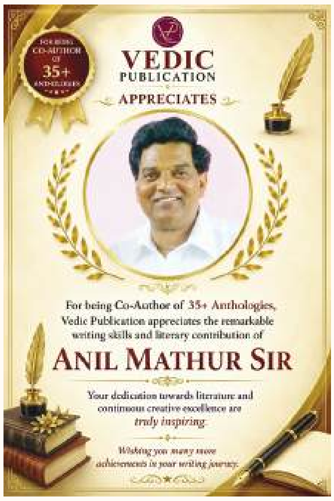

दस दिवसीय धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर का उत्साहपूर्वक समापन

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर के तत्वावधान में 17 मई से 28 मई तक आयोजित दस दिवसीय धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर का समापन श्री दिगम्बर जैन मंदिर, वरुण पथ, मानसरोवर में धार्मिक एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। समापन समारोह का शुभारंभ चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन के साथ वीरेश जैन, मनोज सोगानी, निर्मल काला एवं भंवरी देवी काला के करकमलों द्वारा किया गया। इसके पश्चात बालक-बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने उपस्थित जनसमूह का मन मोह लिया। कार्यक्रम में श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर की राष्ट्रीय अध्यक्षा शीला डोडिया का सम्मान किया गया। उनके करकमलों से शिविर में आयोजित परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। शिविर के सफल संचालन में योगदान देने वाली विदुषी दीदी वंशिका, रेशु दीदी, स्थानीय शिक्षक विनोद छाबड़ा, अंजू जैन, अर्पणा ठोलिया सहित अन्य शिक्षकों एवं कार्यकर्ताओं का भी सम्मान किया गया। समिति के संगठन मंत्री सुनील जैन गंगवाल ने बताया कि समारोह में समाज अध्यक्ष जे.के. जैन, मंत्री ज्ञान बिलाला, महिला महासमिति अध्यक्ष तारामणि गोधा एवं संरक्षक हीरामणि छाबड़ा सहित अनेक वरिष्ठजनों का प्रबंधकारिणी समिति एवं महिला महासमिति द्वारा अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में मंत्री मीनू गोधा, कोषाध्यक्ष मंजू जैन, संयोजक अनीता लुहाड़िया, कृष्णा जैन, अनीता बड़जात्या एवं संध्या जैन का विशेष सहयोग रहा। समापन समारोह में पाठशाला के छात्र-छात्राएं, महिला एवं पुरुष वर्ग, युवा मंडल के सदस्य तथा बड़ी संख्या में समाजबंधु उपस्थित रहे। शिविर के दौरान अध्ययनरत सभी शिविरार्थियों को पुण्यार्जक परिवारों द्वारा पुरस्कार प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। वक्ताओं ने कहा कि ऐसे संस्कार शिविर बच्चों एवं युवाओं में धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समारोह का समापन आभार प्रदर्शन एवं मंगलकामनाओं के साथ हुआ।

वातरोग क्या है?

सामान्य बोलचाल में ''वातरोग'' शब्द का प्रयोग प्रायः जोड़ों, मांसपेशियों, नसों और हड्डियों से संबंधित उन रोगों के लिए किया जाता है, जिनमें दर्द, जकड़न, सूजन तथा चलने-फिरने में कठिनाई होती है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इसके अंतर्गत कई प्रकार के रोग शामिल किए जाते हैं, जैसे ऑस्टियोआर्थराइटिस, रूमेटॉइड आर्थराइटिस, गाउट आदि।

वातरोग के मुख्य लक्षण

जोड़ों में दर्द रहना।
सुबह उठने पर जकड़न महसूस होना।
जोड़ों में सूजन दिखाई देना।
चलने-फिरने में कठिनाई होना।
हाथ-पैरों में अकड़न रहना।
मांसपेशियों में दर्द बने रहना।
कमजोरी और थकान महसूस होना।
मौसम बदलने पर दर्द बढ़ जाना।
गंभीर मामलों में जोड़ों का विकृत हो जाना।
वातरोग के प्रमुख कारण
बढ़ती उम्र-उम्र बढ़ने के साथ जोड़ों का घिसाव होना।
आनुवंशिक कारण-परिवार में गठिया या वातरोग का इतिहास होना।
मोटापा -जोड़ों पर अतिरिक्त दबाव पड़ना।
यूरिक एसिड का बढ़ना -विशेषकर गाउट रोग में।
प्रतिरक्षा तंत्र की असामान्य प्रतिक्रिया -शरीर द्वारा अपने ही जोड़ों पर हमला करना।
पुरानी चोटें -जोड़ों पर बार-बार तनाव या चोट लगना।
व्यायाम की कमी -जोड़ों की लचक कम होना।
असंतुलित आहार -आवश्यक पोषक तत्वों की कमी होना।

वातरोग के प्रकार

1. **ऑस्टियोआर्थराइटिस:** यह वातरोग का सबसे सामान्य प्रकार है। यह मुख्यतः घुटनों, कूल्हों और रीढ़ की हड्डी को प्रभावित करता है।
2. **रूमेटॉइड आर्थराइटिस:** यह एक ऑटोइम्यून रोग है, जिसमें हाथों और पैरों के छोटे जोड़ों पर अधिक प्रभाव पड़ता है। उंगलियों में सूजन और टेढ़ापन आ सकता है।
3. **गाउट:** रक्त में यूरिक एसिड बढ़ने के कारण होता है। इसमें पैर के अंगूठे में तीव्र दर्द और सूजन होती है।
4. **सर्वाइकल स्पॉन्डिलाइटिस:** यह गर्दन की हड्डियों और जोड़ों से संबंधित रोग है।
5. **एंकाइलोज़िंग स्पॉन्डिलाइटिस:** इसमें रीढ़ की हड्डी में सूजन और जकड़न उत्पन्न होती है।
6. **फाइब्रोमायल्जिया:** इसमें पूरे शरीर में दर्द, थकान और संवेदनशीलता की समस्या रहती है।

वातरोग में सावधानियां

वजन नियंत्रित रखें।
नियमित रूप से हल्का व्यायाम करें।
लंबे समय तक एक ही स्थिति में न बैठें।
पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं।
अत्यधिक ठंडी वस्तुओं के सेवन से बचें।
फ्रिज से निकली वस्तुओं को कुछ समय सामान्य तापमान पर रखने के बाद उपयोग करें।
धूम्रपान और मद्यपान से बचें।
कैल्शियम और विटामिन-डी युक्त भोजन लें।
जोड़ों पर अत्यधिक भार न डालें।
दर्द बढ़ने पर चिकित्सकीय परामर्श लें।
कुछ घरेलू उपाय
गुनगुने पानी से सेक करें।
हल्का योग एवं स्ट्रेचिंग करें।
संतुलित एवं पौष्टिक आहार लें।
पर्याप्त नींद और आराम करें।
मेथी, अलसी तथा हल्दी का सीमित मात्रा में सेवन लाभकारी हो सकता है।

होम्योपैथिक उपचार

होम्योपैथी में औषधि का चयन रोगी के संपूर्ण लक्षणों, प्रकृति तथा रोग की अवस्था को ध्यान में रखकर किया जाता है। कुछ प्रचलित औषधियां निम्न हैं–

1. **रस टॉक्स:** आराम करने पर दर्द बढ़े। चलने-फिरने से राहत मिले। ठंड और नमी से शिकायत बढ़े।
2. **ब्रायोनिया:** हिलने-डुलने से दर्द बढ़े। आराम करने से राहत मिले।
3. **आर्निका मोंटाना:** चोट या अधिक परिश्रम के बाद होने वाले दर्द में उपयोगी मानी जाती है।
4. **लीडम:** गाउट तथा पैरों के जोड़ों के दर्द में उपयोगी मानी जाती है।
5. **कैल्केरिया फ्लोर:** पुराने जोड़ों के रोगों में सहायक मानी जाती है।
6. **कास्टिकम:** जोड़ों की जकड़न और कमजोरी की स्थिति में उपयोगी मानी जाती है।
7. **रुटा:** लिगामेंट एवं टेंडन संबंधी दर्द में उपयोगी मानी जाती है।

वर्तमान में अनेक होम्योपैथिक पेटेंट औषधियां भी उपलब्ध हैं, किंतु किसी भी औषधि का सेवन योग्य होम्योपैथिक चिकित्सक की सलाह के बिना नहीं करना चाहिए। आवश्यकता अनुसार फिजियोथेरेपी भी लाभकारी हो सकती है।

कब तुरंत चिकित्सक से संपर्क करें?

जोड़ों में अत्यधिक सूजन, लालिमा एवं असहनीय दर्द हो। तेज बुखार के साथ जोड़ों का दर्द बना रहे। अचानक चलने-फिरने में असमर्थता महसूस हो। दर्द लगातार बढ़ता जा रहा हो। हाथ-पैरों में कमजोरी या सुन्नपन महसूस होने लगे।

वातरोग एक व्यापक शब्द है, जिसमें विभिन्न प्रकार के गठिया एवं जोड़ों के रोग शामिल हैं। समय पर पहचान, संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, वजन नियंत्रण तथा उचित चिकित्सा से अधिकांश रोगियों में इसके प्रभाव को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। होम्योपैथिक उपचार कुछ रोगियों में लक्षणों से राहत देने में सहायक हो सकते हैं, किंतु गंभीर या बढ़ती हुई समस्या में विशेषज्ञ चिकित्सक की सलाह अवश्य लेनी चाहिए। किसी भी उपचार पद्धति को अपनाने से पूर्व योग्य चिकित्सक का परामर्श लेना सर्वोत्तम रहता है।

– डॉ. एम.एल. जैन ''मणि''
अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ होम्योपैथ
पूर्व शैक्षणिक सदस्य, होम्योपैथिक विश्वविद्यालय

रिश्तों को कायम रखने के लिए प्रेम आवश्यक : गुरुमाँ विज्ञाश्री माताजी

टोंक. शाबाश इंडिया

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, आदर्श नगर, टोंक में विराजमान परम पूज्य भारत गौरव, सहस्रकूट विज्ञातीर्थ प्रणेता गणिनी आर्यिका 105 विज्ञाश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में धार्मिक कार्यक्रमों का क्रम निरंतर जारी है। मंदिर परिसर में चल रही ग्रीष्मकालीन वाचना में बड़ी संख्या में श्रद्धालु धर्म लाभ प्राप्त कर रहे हैं। समाज के प्रवक्ता प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि प्रतिदिन प्रातः अभिषेक एवं शांतिधारा के पश्चात धर्मसभा का आयोजन किया जाता है, जिसमें श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित होकर धर्मोपदेश का लाभ लेते हैं। समाज मंत्री संजय संघी जैन ने बताया कि धर्मसभा को संबोधित करते हुए गुरुमाँ विज्ञाश्री माताजी ने वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज मानवता का ह्रास होता जा रहा है। उन्होंने कहा, ?एक मच्छर दूसरे मच्छर को नहीं काटता, लेकिन इंसान इंसान को काट रहा है। आज पशु की पशुता कायम है, किंतु मानव की मानवता समाप्त होती जा रही है। गुरुमाँ ने कहा कि आधुनिक जीवनशैली में घरों की दीवारें तो बड़ी होती जा रही हैं, लेकिन लोगों के दिल छोटे होते जा रहे हैं। यही कारण है कि परिवारों में आपसी प्रेम और सौहार्द कम होता जा रहा है तथा भाई-भाई, पिता-पुत्र और सास-बहू जैसे रिश्तों में भी दूरियां बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार धागे के बिना सिलाई मशीन कपड़ा नहीं सिल सकती, उसी प्रकार प्रेम रूपी धागे के बिना रिश्तों को लंबे समय तक नहीं निभाया जा सकता। परिवार और समाज में प्रेम, सहिष्णुता और आपसी सम्मान बनाए रखना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि प्रतिदिन सायं 6:30 बजे गुरुमाँ विज्ञाश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में आनंद यात्रा एवं महाआरती का आयोजन भी नियमित रूप से किया जा रहा है, जिसमें श्रद्धालु उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं।

विशाल स्वैच्छिक रक्तदान एवं नि:शुल्क मेडिकल जांच शिविर संपन्न, 70 यूनिट रक्त संग्रहित

जयपुर. शाबाश इंडिया

कैलाश विमल मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा परिषद, मानसरोवर संभाग के संयुक्त तत्वावधान में स्वर्गीय कैलाशचंद जैन (फागी वाले) की पुण्य स्मृति में विशाल स्वैच्छिक रक्तदान एवं नि:शुल्क मेडिकल जांच शिविर का आयोजन रविवार को श्री दिगंबर जैन मंदिर, वरुण पथ, मानसरोवर में श्रद्धा, सेवा और समर्पण भाव के साथ किया गया। कार्यक्रम के पुण्यार्जक सतीश कुमार, अनुप, पूजा, हेल्वी एवं गुणवित कासलीवाल परिवार (फागी वाले) रहे। शिविर का शुभारंभ भगवान महावीर स्वामी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। दीप प्रज्वलन शेखरचंद जैन एवं रतन सोगानी द्वारा किया गया। इसके पश्चात अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया गया। कैलाश विमल मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष अशोक कासलीवाल, मंत्री सतीश कासलीवाल तथा अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा परिषद, मानसरोवर संभाग के अध्यक्ष अशोक बिंदायका ने बताया कि शिविर में 70 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया, जबकि 103 लोगों ने रक्तदान के लिए पंजीकरण कराया। रक्तदान के प्रति युवाओं एवं समाज के विभिन्न वर्गों में विशेष उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम में परिषद के परम शिरोमणि संरक्षक डॉ. राजीव जैन, राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन, प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जैन, प्रदेश महामंत्री विमल बज, राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाषचंद्र जैन, महामंत्री मनीष वेद सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। वक्ताओं ने रक्तदान को महादान बताते हुए अधिकाधिक लोगों से नियमित रूप से रक्तदान करने का आह्वान किया। रक्तदान शिविर में डॉ. प्रमिला जैन एवं सुमन ब्लड बैंक की टीम ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं। चिकित्सकों की टीम ने रक्तदाताओं की स्वास्थ्य जांच एवं रक्त संग्रहण का कार्य सुव्यवस्थित रूप से संपन्न कराया। शिविर में आए सभी रक्तदाताओं को अल्पाहार उपलब्ध कराया गया तथा उन्हें प्रशस्ति-पत्र एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के सफल संचालन में मुख्य संयोजक लोकेश सोगानी, रवि गोदीका, मुकेश जैन, नीरज

कैलाश विमल मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष अशोक कासलीवाल, मंत्री सतीश कासलीवाल तथा अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा परिषद, मानसरोवर संभाग के अध्यक्ष अशोक बिंदायका ने बताया कि शिविर में 70 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया, जबकि 103 लोगों ने रक्तदान के लिए पंजीकरण कराया।

बाकलीवाल, चेतन जैन, रतन सोगानी एवं रुचि जैन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। वहीं ट्रस्ट के सहमंत्री मुकेश कासलीवाल, सदस्य पूजा जैन एवं शुभम जैन ने व्यवस्थाओं का कुशल संचालन किया। समापन अवसर पर ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष रोहित कासलीवाल एवं परिषद के कोषाध्यक्ष रवि गोदीका ने सभी अतिथियों, चिकित्सकों, रक्तदाताओं, सहयोगकर्ताओं एवं कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि मानव सेवा एवं जनकल्याण के ऐसे आयोजन भविष्य में भी निरंतर आयोजित किए जाते रहेंगे।

प्रफुल जैन भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के राजस्थान प्रदेश मंत्री नियुक्त

जयपुर. शाबाश इंडिया। भारतीय जनता पार्टी संगठन को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण संगठनात्मक निर्णय लेते हुए प्रफुल जैन को भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा, राजस्थान का प्रदेश मंत्री नियुक्त किया गया है। उनकी नियुक्ति पर कार्यकर्ताओं, समर्थकों एवं समाज के विभिन्न वर्गों में हर्ष का माहौल है। प्रफुल जैन लंबे समय से सामाजिक एवं संगठनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं। संगठन के प्रति उनकी निष्ठा, सक्रियता तथा समाज सेवा के क्षेत्र में निरंतर योगदान को देखते हुए उन्हें यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र से जुड़े लोगों का मानना है कि प्रफुल जैन के अनुभव, संगठनात्मक कौशल और जनसंपर्क क्षमता से भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा को नई ऊर्जा और मजबूती मिलेगी। उनके नेतृत्व में संगठन की गतिविधियों को और अधिक विस्तार मिलने की उम्मीद जताई जा रही है। नियुक्ति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रफुल जैन ने भाजपा के शीर्ष नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ तथा भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष हमीद खान मेवाती का विशेष धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि नेतृत्व द्वारा उन पर जताए गए विश्वास पर खरा उतरने का पूरा प्रयास करेंगे। प्रफुल जैन ने कहा कि वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास'' के मूल मंत्र को आत्मसात करते हुए संगठन की मजबूती और जनसेवा के लिए पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना उनकी प्राथमिकताओं में शामिल रहेगा। नियुक्ति की घोषणा के बाद विभिन्न सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक संगठनों के प्रतिनिधियों, समाजसेवियों तथा युवाओं ने प्रफुल जैन को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित कीं। शुभचिंतकों ने विश्वास व्यक्त किया कि उनके नेतृत्व में संगठन नई उपलब्धियां हासिल करेगा तथा समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संवाद और सहभागिता को और अधिक मजबूती मिलेगी।

108 दिनों में 108 श्री शांतिनाथ महामंडल विधान का भव्य आयोजन

टोंक. शाबाश इंडिया। श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, बड़ा तख्ता में आयोजित 108 दिनों में 108 श्री शांतिनाथ महामंडल विधान का भव्य आयोजन श्रद्धा, भक्ति एवं धार्मिक उल्लास के साथ निरंतर जारी है। प्रतिदिन विभिन्न परिवारों द्वारा विधान का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु सहभागी बनकर धर्म लाभ प्राप्त कर रहे हैं। विधान संयोजक पारस सर्राफ ने बताया कि इस विशेष धार्मिक आयोजन के अंतर्गत प्रतिदिन अलग-अलग परिवारों द्वारा श्री शांतिनाथ महामंडल विधान संपन्न कराया जा रहा है। श्रद्धालु भगवान शांतिनाथ की पूजा-अर्चना एवं भक्ति के माध्यम से आध्यात्मिक साधना कर रहे हैं। मंगलवार को वीरेंद्र कुमार, महेंद्र कुमार, अंकुर कुमार एवं अभिषेक कुमार पाटनी (कापरेन वाले) परिवार की ओर से श्री शांतिनाथ महामंडल विधान का आयोजन श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर भजन सम्राट विनोद सर्राफ, कमल सर्राफ एवं विकास अटार द्वारा प्रस्तुत मधुर भजनों ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया। भजनों पर श्रद्धालुओं ने भक्ति नृत्य कर अपनी आस्था व्यक्त की। विधान के दौरान श्रद्धालुओं ने भगवान शांतिनाथ के समक्ष पूजा-अर्चना कर परिवार, समाज एवं विश्व के कल्याण, सुख-समृद्धि तथा शांति की मंगलकामना की। विधान आयोजन समिति के पारस सर्राफ, महेश बाड़वाले, पिंटू गोयल, पारस करौली, मुकेश बोरदा एवं सुनील सर्राफ ने बताया कि आयोजन में प्रतिदिन विभिन्न परिवार उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। साथ ही सायंकालीन बेला में नियमित रूप से आरती, शास्त्र सभा एवं स्वाध्याय वाचन का आयोजन भी किया जा रहा है, जिसका लाभ बड़ी संख्या में श्रद्धालु प्राप्त कर रहे हैं। समिति के अनुसार यह धार्मिक आयोजन समाज में धर्म, संस्कार एवं आध्यात्मिक चेतना को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में प्राकृत विद्या शिक्षण शिविर का भव्य समापन

उदयपुर में गूंजी प्राकृत वाणी, 20 मंदिरों के शिक्षण शिविर का सामूहिक समापन

उदयपुर. शाबाश इंडिया। प्राकृत भाषा विकास फाउंडेशन एवं मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में उदयपुर के 20 जैन मंदिरों में आयोजित प्राकृत विद्या शिक्षण शिविर का भव्य सामूहिक समापन एवं सम्मान समारोह विश्वविद्यालय के बप्पा रावल सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम परम पूज्य प्राकृताचार्य आचार्यश्री 108 सुनीलसागर महाराज के पावन आशीर्वाद एवं निर्देशन में संपन्न हुआ। समारोह का शुभारंभ विश्वविद्यालय के डीन प्रो. नीरज शर्मा, सकल दिगंबर जैन समाज के पदाधिकारियों एवं विशिष्ट अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इस अवसर पर विभिन्न जैन पाठशालाओं के विद्यार्थियों ने प्राकृत भाषा आधारित मंगलाचरण, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां एवं नाट्य मंचन प्रस्तुत कर उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुख्य अतिथि प्रो. नीरज शर्मा ने अपने उद्बोधन में प्राकृत भाषा को भारतीय भाषाओं की आधारशिला बताते हुए कहा कि विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित ऐसे कार्यक्रम भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों एवं प्राचीन ज्ञान परंपरा के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने युवाओं से प्राकृत भाषा के अध्ययन और संरक्षण में सक्रिय सहभागिता निभाने का आह्वान किया। शिविर के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. आशीष जैन आचार्य ने बताया कि शिविर के माध्यम से प्रतिभागियों को प्राकृत भाषा, जैन संस्कार, नीति ग्रंथों तथा भारतीय संस्कृति का शिक्षण प्रदान किया गया। शिविर में उदयपुर के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 1100 शिविरार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। शिविर संयोजक रितेश जैन ने बताया कि कार्यक्रम में सकल दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष शांतिलाल वेलावत, महामंत्री सुरेश पद्मावत, डॉ. जिनेंद्र जैन, डॉ. ज्योति बाबू शास्त्री, डॉ. सुमत जैन, डॉ. शैलेष जैन, धरणेन्द्र जैन शास्त्री, कमलकुमार जैन एवं बी.एल. गोदावत सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शिविरार्थियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही स्थानीय संयोजकों, शिक्षकों एवं सहयोगियों का भी अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम के दौरान आगामी वर्ष देशभर के 108 स्थानों पर प्राकृत विद्या शिक्षण शिविर आयोजित किए जाने की घोषणा की गई। समापन अवसर पर वक्ताओं ने प्राकृत भाषा को भारतीय सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग बताते हुए इसके संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया।

भार बनकर नहीं, उपहार बनकर जीवन व्यतीत करें तभी मानव जन्म की सार्थकता है : उपाध्याय विकसंत सागर महाराज

निवाई. शाबाश इंडिया। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में आचार्य विनम्र सागर महाराज के शिष्य मुनि श्री विश्वमित सागर महाराज का निवाई से जहाजपुर के लिए मंगल विहार हुआ। मुनि श्री ने निवाई में विराजमान उपाध्याय विकसंत सागर महाराज ससंघ से आज्ञा एवं आशीर्वाद प्राप्त कर अग्रवाल जैन मंदिर से विहार प्रारंभ किया। वे सोहेला एवं टोंक होते हुए जहाजपुर पहुंचेंगे, जहां भगवान मुनिसुव्रतनाथ के दर्शन कर स्वाध्याय एवं साधना करेंगे। जैन समाज के प्रवक्ता सुनील भाणजा एवं विमल जौंला ने बताया कि मुनि श्री विश्वमित सागर महाराज जहाजपुर से पुनः पदविहार करते हुए निवाई लौटेंगे। इस अवसर पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए उपाध्याय विकसंत सागर महाराज ने कहा कि मनुष्य को इस पृथ्वी पर भार नहीं, बल्कि उपहार बनकर जीवन व्यतीत करना चाहिए। उन्होंने कहा कि संसार में सुख और दुःख की दो धाराएं निरंतर प्रवाहित होती रहती हैं और मनुष्य इन दोनों के बीच झूलता रहता है। ऐसे में मानव जीवन की सार्थकता धर्म, संयम, ज्ञान और सद्गुणों को अपनाने में है। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति न विद्या प्राप्त करता है, न तप करता है, न संयम का पालन करता है, न दान देता है और न ही धर्म एवं सदाचार के मार्ग पर चलता है, वह मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझ नहीं पाता। ऐसे व्यक्ति केवल अपने भौतिक जीवन तक सीमित रह जाते हैं, जबकि मनुष्य जीवन का उद्देश्य आत्मकल्याण और समाज कल्याण दोनों है।

श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर में समापन एवं सम्मान समारोह आयोजित

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर में आयोजित धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर के समापन एवं सम्मान समारोह का आयोजन श्रद्धा एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में किया गया। समारोह में शिविर के सफल संचालन एवं समाज सेवा में योगदान देने वाले पदाधिकारियों, संयोजकों तथा प्रतिभागियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर श्री मुल्तान दिगंबर जैन मंदिर, आदर्श नगर के अध्यक्ष चंद्रेश जैन, मंत्री अनिल जैन तथा मुल्तान महिला मंडल की मंत्री नम्रता जैन का विशेष सम्मान किया गया। समाज एवं धार्मिक गतिविधियों में उनके योगदान की सराहना करते हुए उन्हें अभिनंदन-पत्र एवं सम्मान प्रतीक भेंट किए गए। कार्यक्रम में शिविर की संयोजक मीनू जैन एवं नूपुर जैन का भी सम्मान किया गया। दोनों संयोजिकाओं ने शिविर के सफल संचालन और व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समारोह के दौरान शिविर में आयोजित विभिन्न परीक्षाओं एवं प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। वक्ताओं ने प्रतिभागियों को धर्म, संस्कार और शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। समापन समारोह में बड़ी संख्या में समाजजन, महिला मंडल की सदस्याएं, शिविरार्थी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं एवं मंगलकामनाएं प्रदान करते हुए किया गया।

पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था, संरक्षण का लिया संकल्प

सीकर. शाबाश इंडिया। भीषण गर्मी के दौरान बेजुबान पशु-पक्षियों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से लक्ष्मी मार्केट में परिंडे एवं चुग्गादान लगाने का सेवा कार्य किया गया। इस अवसर पर पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था कर उनके संरक्षण का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम के दौरान संजय शर्मा ने नियमित रूप से परिंडों में पानी भरने तथा चुग्गादानों में दाना डालने का संकल्प लेते हुए कहा कि गर्मी के मौसम में पक्षियों और अन्य बेजुबान जीवों की सेवा करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक दायित्व है। उन्होंने आमजन से भी इस पुनीत कार्य में आगे आने की अपील की। समाजसेवी भागचंद सेठी ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि बढ़ती गर्मी और जल स्रोतों की कमी के कारण पक्षियों को भोजन और पानी की समस्या का सामना करना पड़ता है। ऐसे में अधिक से अधिक स्थानों पर परिंडे एवं चुग्गादान लगाकर जीव दया की भावना को बढ़ावा देना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों ने पक्षियों की सुरक्षा, संरक्षण और सेवा के लिए निरंतर कार्य करने का संकल्प लिया। साथ ही आमजन से अपने घरों, दुकानों एवं सार्वजनिक स्थलों पर परिंडे लगाकर दाना-पानी की व्यवस्था करने का आह्वान किया गया। इस अवसर पर भागचंद सेठी जैन, प्रियंक गंगवाल, संजय शर्मा, शम्मीकांत शर्मा, पवन पाराशर, आदिल खलीफा, मदन सिंह, निखिल सैनी, सुनील रुहेला, राहुल सैनी सहित अनेक समाजसेवी एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के माध्यम से जीव दया, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश दिया गया।

शब्द, संवेदना और सम्मान की ऐतिहासिक शाम

अजीत सेन भवन में गूंजी तालियों की गड़गड़ाहट

कोलकाता. शाबाश इंडिया

कोलकाता के सांस्कृतिक परिदृश्य में शब्द, साहित्य और संवेदनाओं से सजी एक अविस्मरणीय शाम ने साहित्य प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। हिन्दी साहित्य परिषद के तत्वावधान में अजीत सेन भवन में आयोजित ''विराट कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह'' ने महानगर के साहित्यिक इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ विजय इस्सर की ओजपूर्ण गणेश वंदना एवं मंजू बेज की सुमधुर सरस्वती वंदना से हुआ। इसके पश्चात उपस्थित अतिथियों एवं साहित्यकारों ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। हिन्दी साहित्य परिषद के चेयरमैन तारकनाथ दूबे एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय शुक्ला के नेतृत्व में आयोजित इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कोल इंडिया के मुख्य सतर्कता अधिकारी बृजेश त्रिपाठी उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में साहित्य को समाज का पथप्रदर्शक बताते हुए कहा कि साहित्य समाज को दिशा देने और मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रख्यात साहित्यकार रवैल पुष्प एवं वरिष्ठ रचनाकार गिरधर राय की गरिमामयी उपस्थिति रही। परिषद की ओर से सभी अतिथियों एवं साहित्यकारों का सम्मान एवं अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का प्रभावशाली संचालन आदित्य त्रिपाठी एवं प्रदीप कुमार धानुक ने किया। दोनों संचालकों ने अपनी कुशल प्रस्तुति से कार्यक्रम को रोचक और व्यवस्थित बनाए रखा। औपचारिक सत्र के बाद शुरू हुए कवि सम्मेलन में देश-विदेश से आए कवियों ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं का पाठ किया। श्रृंगार, वीर, हास्य-व्यंग्य एवं समसामयिक विषयों पर आधारित कविताओं ने श्रोताओं को देर रात तक बांधे रखा। कवियों की प्रभावशाली प्रस्तुतियों पर सभागार बार-बार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठता रहा। कार्यक्रम के समापन पर हिन्दी साहित्य परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय शुक्ला ने सभी अतिथियों, साहित्यकारों, कवियों एवं श्रोताओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि परिषद साहित्य और संस्कृति के संवर्धन के लिए भविष्य में भी ऐसे आयोजनों का क्रम जारी रखेगी। साहित्य, संवेदना और सम्मान से सजी यह भव्य शाम कोलकाता के साहित्यिक जगत के लिए एक यादगार और प्रेरणादायी आयोजन बन गई।

पापा की सेहत ही सबसे बड़ा सम्मान: फादर्स डे पर होगा पिता सम्मान समारोह

गीतांजली हॉस्पिटल एवं लायंस क्लब अशोका का संयुक्त आयोजन, 20 जून को जीएमसीएच ऑडिटोरियम में जुटेंगे पिता और परिवार

उदयपुर. शाबाश इंडिया

फादर्स डे के अवसर पर पिता के सम्मान और उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का संदेश देने के उद्देश्य से गीतांजली हॉस्पिटल एंड मेडिकल कॉलेज (जीएमसीएच), उदयपुर एवं लायंस क्लब अशोका के संयुक्त तत्वावधान में 20 जून 2026 को दोपहर 3 से शाम 7 बजे तक जीएमसीएच ऑडिटोरियम में पिता सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में शहर के सभी पिताओं एवं उनके परिवारों को आमंत्रित किया गया है। इस अवसर पर बच्चे अपने पिता को मंच पर सम्मानित करवा सकेंगे तथा उनके प्रति प्रेम, सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त कर सकेंगे। कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन मंगलवार को जीएमसीएच के सीईओ ऋषि कपूर, लायंस क्लब उदयपुर अशोका के संस्थापक अध्यक्ष मुकेश माधवानी तथा सचिव श्रीचंद खथुरिया की उपस्थिति में किया गया। जीएमसीएच के सीईओ ऋषि कपूर ने कहा कि पिता जीवनभर परिवार की जरूरतों और बच्चों के सपनों को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन अक्सर अपनी स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को नजरअंदाज कर देते हैं। ऐसे में यह आयोजन केवल सम्मान का अवसर नहीं, बल्कि उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ाने का भी माध्यम बनेगा। जीएमसीएच के मार्केटिंग हेड कल्पेश चंद रजबार ने कहा कि स्वस्थ पिता ही स्वस्थ परिवार और सशक्त समाज की नींव होते हैं। कार्यक्रम के माध्यम से समाज को यह संदेश दिया जाएगा कि जिन्होंने जीवनभर परिवार का ख्याल रखा, अब उनकी सेहत का ध्यान रखना भी परिवार की जिम्मेदारी है। लायंस क्लब अशोका के संस्थापक अध्यक्ष मुकेश माधवानी ने बताया कि पिता परिवार की वह मजबूत आधारशिला हैं जिनके त्याग, संघर्ष और समर्पण पर पूरे परिवार का भविष्य टिका होता है। समारोह के माध्यम से पारिवारिक मूल्यों को सुदृढ़ करने के साथ-साथ पिता के प्रति सम्मान और उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का संदेश भी प्रसारित किया जाएगा। क्लब के सचिव श्रीचंद खथुरिया ने बताया कि कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाले पिताओं का सम्मान किया जाएगा। साथ ही परिवारों को यह प्रेरणा दी जाएगी कि फादर्स डे केवल शुभकामनाओं और उपहारों तक सीमित न रहे, बल्कि पिता की सेहत और खुशहाली के प्रति संकल्प का दिन बने। आयोजकों के अनुसार आज की व्यस्त जीवनशैली में पिता अक्सर अपनी थकान, तनाव और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को नजरअंदाज कर देते हैं। ऐसे में यह आयोजन नई पीढ़ी को यह संदेश देगा कि पिता के प्रति सच्चा प्रेम केवल सम्मान में नहीं, बल्कि उनकी अच्छी सेहत और देखभाल सुनिश्चित करने में भी निहित है। आखिरकार, फादर्स डे का सबसे बड़ा उपहार कोई वस्तु नहीं, बल्कि पापा की अच्छी सेहत है।

रिपोर्ट/ फोटो: राकेश शर्मा 'राजदीप'

हरि शेवा उदासीन आश्रम में संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन

हृदय रूपी पात्र की निर्मलता से मिलता है भागवत कथा का पूर्ण फल : स्वामी अशोकानंद जी महाराज

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। सनातन सेवा समिति, हरि शेवा उदासीन आश्रम, सनातन मंदिर एवं महामंडलेश्वर स्वामी हंसराम जी उदासीन महाराज के सानिध्य में पुरुषोत्तम मास के पावन अवसर पर आयोजित संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा के द्वितीय दिवस श्रद्धालुओं ने भक्ति और आध्यात्मिकता की सरिता में अवगाहन किया। कथाव्यास पूज्य स्वामी अशोकानंद जी महाराज (जबलपुर) ने कथा के दौरान कहा कि गुरु परमात्मा का प्रतिनिधि स्वरूप है और गुरु से प्राप्त होने वाला ज्ञान रूपी अमृत साधक की पात्रता पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा का वास्तविक और पूर्ण फल तभी प्राप्त होता है, जब हृदय रूपी पात्र निर्मल, पवित्र और श्रद्धा से परिपूर्ण हो। स्वामी जी ने कहा कि जिस प्रकार स्वच्छ एवं पवित्र मंदिर में भगवान का वास होता है, उसी प्रकार मन रूपी मंदिर को भी शुद्ध रखना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने हृदय को भगवान का निवास स्थान बनाने का प्रयास करना चाहिए, तभी कथा श्रवण का सच्चा लाभ प्राप्त हो सकता है। कथाव्यास ने श्रीमद्भागवत महापुराण के विभिन्न प्रसंगों का भावपूर्ण वर्णन करते हुए भक्ति, ज्ञान और वैराग्य का संदेश दिया। मधुर भजनों और संगीतमय प्रस्तुति के माध्यम से उन्होंने कहा कि श्रीमद्भागवत महापुराण केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मानव जीवन को परमात्मा की ओर अग्रसर करने वाला दिव्य मार्ग है। भागवत महात्म्य का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि कलियुग में भगवान के नाम का स्मरण तथा श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण जीव के कल्याण का सबसे सरल और श्रेष्ठ साधन है। उन्होंने राजा परीक्षित और परम पूज्य शुकदेव जी महाराज के प्रसंग का उल्लेख करते हुए बताया कि जीवन के अंतिम सात दिनों का ज्ञान होने पर राजा परीक्षित ने सांसारिक मोह-माया का त्याग कर भगवान की कथा का आश्रय लिया और श्रीमद्भागवत के श्रवण से मोक्ष प्राप्त किया। स्वामी अशोकानंद जी महाराज ने श्रद्धालुओं से आह्वान किया कि वे अपने जीवन का प्रत्येक क्षण ईश्वर भक्ति, सत्संग और सद्कर्मों में लगाएं। भगवान की कथा मन को शुद्ध करती है तथा जीवन में सुख, शांति और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। कथा के दौरान प्रस्तुत भजनों पर श्रद्धालु भाव-विभोर होकर झूम उठे और संपूर्ण पांडाल भक्तिमय वातावरण से सराबोर हो गया। भजन, कीर्तन एवं जयघोष से वातावरण धर्ममय बना रहा। कथा के उपरांत आरती एवं प्रसाद वितरण किया गया।

भक्तामर की महिमा का सबसे बड़ा चमत्कार बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक परिवर्तन है: जिनदेवी माताजी

राणाजी की नसियां में भक्तामर स्तोत्र दीप महाअर्चना का भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। आचार्य रत्न बाहुबली महाराज की पट्टशिष्या गणिनी प्रमुख आर्यिकारत्न जिनदेवी माताजी ससंघ इन दिनों आगरा रोड स्थित खानिया क्षेत्र की ऐतिहासिक राणाजी की नसियां में विराजमान हैं। पूज्य माताजी के सान्निध्य में मंगलवार को भक्तामर स्तोत्र दीप महाअर्चना का भव्य आयोजन श्रद्धा और भक्ति के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर धर्म लाभ प्राप्त किया। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान भगवान आदिनाथ की स्तुति के साथ भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान आयोजित किया गया। आचार्य मानतुंगाचार्य द्वारा रचित भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक पाठ एवं जाप किया गया तथा ऋद्धि मंत्रों के साथ मंडल पर दीप अर्पित किए गए। इस अवसर पर आयोजित धर्मसभा में गणिनी प्रमुख आर्यिकारत्न जिनदेवी माताजी ने भक्तामर स्तोत्र की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि भक्तामर स्तोत्र जैन धर्म की एक अनुपम आध्यात्मिक धरोहर है। यह केवल काव्य रचना नहीं, बल्कि भक्ति, श्रद्धा और आत्मिक जागरण का दिव्य स्रोत है। माताजी ने कहा कि भक्तामर स्तोत्र के प्रत्येक श्लोक में भगवान जिनेन्द्र के गुणों का अनुपम वर्णन है। इसमें किसी भौतिक वस्तु की याचना नहीं की गई है, बल्कि भगवान के गुणों का स्मरण कर आत्मा को शुद्ध, निर्मल और उन्नत बनाने की प्रेरणा दी गई है। उन्होंने कहा कि भक्तामर स्तोत्र का सबसे बड़ा चमत्कार बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक परिवर्तन है। नियमित पाठ और चिंतन से व्यक्ति के विचारों में पवित्रता आती है, व्यवहार में विनम्रता विकसित होती है तथा धर्म और आध्यात्मिकता के प्रति आस्था सुदृढ़ होती है। कार्यक्रम का समापन जिनवाणी स्तुति के साथ हुआ। इससे पूर्व मूलनायक भगवान वासुपूज्य के अभिषेक एवं शांतिधारा का आयोजन किया गया। धर्मसभा के प्रारंभ में चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन किया गया तथा श्रद्धालुओं द्वारा पूज्य माताजी का पाद प्रक्षालन एवं जिनवाणी भेंट का कार्यक्रम भी संपन्न हुआ।

पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह के साथ धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर का समापन

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगम्बर जैन महासमिति, सांगानेर संभाग एवं प्रतापनगर सेक्टर-3 इकाई के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ग्रीष्मकालीन धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर का पुरस्कार वितरण, सम्मान एवं समापन समारोह प्रतापनगर स्थित कृष्णा गार्डन में उत्साह एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। समारोह में शिविर के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों, शिक्षकों तथा विभिन्न इकाइयों के पदाधिकारियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर बच्चों ने आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनमोहक प्रस्तुतियां देकर उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। संभाग अध्यक्ष कैलाशचंद जैन मलैया ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय महामंत्री सुरेन्द्र कुमार पाण्डया रहे, जबकि समारोह की अध्यक्षता राजस्थान अंचल के निवर्तमान अध्यक्ष उत्तम पाण्डया ने की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि ऐसे संस्कार शिविर बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण एवं नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिविरों के माध्यम से बालकों में धर्म, संस्कृति और नैतिक मूल्यों का बीजारोपण होता है, जो भविष्य में समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। उत्तम पाण्डया ने कहा कि महासमिति का उद्देश्य समन्वय, सद्भाव एवं संगठन को सशक्त बनाना है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न आयु वर्गों के लोगों के लिए समय-समय पर संस्कार शिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं। महिला अंचल अध्यक्षा शकुंतला बिंदायका ने अपने उद्बोधन में कहा कि यदि महिलाएं बच्चों को धार्मिक एवं नैतिक संस्कार देने का संकल्प लें तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन स्वतः दिखाई देने लगेगा। कार्यक्रम का शुभारंभ कमल प्रकाश जैन, पुनीत जैन एवं बबीता जैन द्वारा चित्र अनावरण, नरेश कुमार-सुमन जैन द्वारा दीप प्रज्वलन तथा राजकुमार शाह एवं आशा शाह द्वारा जिनवाणी स्थापना के साथ किया गया। इस अवसर पर मुकेश-ममता पराणा वाले, महावीर प्रसाद-मधु जैन, चारू जैन, रोही जैन मलैया, डॉ. सरोज जैन श्योपुर तथा लीला जैन-शिखरचंद जैन द्वारा शिक्षकों एवं विभिन्न कक्षाओं में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किए गए। समारोह में प्रतापनगर सेक्टर-3, 5, 8 एवं 17, श्योपुर, गोवर्धन नगर, सूर्य नगर, सांगानेर सिटी, चीलगाड़ी जैन मंदिर, शिवदासपुरा, चाकसू, रॉयल एवेन्यू सीताबाड़ी, दुर्गापुरा, चौमूबाग एवं रैनवाल मांजी सहित विभिन्न अधीनस्थ इकाइयों के मंदिर पदाधिकारियों, इकाई अध्यक्षों, मंत्रियों एवं शिविर प्रभारियों का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम में सुरेन्द्र कुमार झांझरी, डॉ. अरविन्द कुमार जैन, राकेश पाटनी, कमलेश कुमार बोहरा, संतोष कुमार जैन, अजीत कुमार जैन, प्रेमचंद बड़जात्या, अशोक पापड़ीवाल, हीरादेवी पाटनी, सुरेन्द्र कुमार बड़जात्या, नवीन कुमार जैन, सुनील बज, डॉ. णमोकार जैन एवं अनिल कुमार जैन सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सुनीता गंगवाल एवं डॉ. बी.सी. जैन ने किया।

नाटक 'झुंड' का भावपूर्ण मंचन, सामाजिक संवेदनाओं को किया उजागर

जयपुर. शाबाश इंडिया

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की 'गुरु-शिष्य परम्परा (रिपर्टरी ग्रांट)' योजना के सहयोग से नाद संस्था द्वारा आयोजित 45 दिवसीय नाट्य कार्यशाला में तैयार किए गए नाटक 'झुंड' का प्रभावशाली मंचन कांस्टीट्यूशन क्लब, जयपुर में किया गया। नाटक ने अपनी संवेदनशील प्रस्तुति और सशक्त सामाजिक संदेश से दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया। नाटक का लेखन एवं निर्देशन वरिष्ठ रंगकर्मी विपिन प्रीतिमानी ने किया। प्रस्तुति में समाज और मानवीय संवेदनाओं के बदलते स्वरूप को प्रतीकात्मक एवं मार्मिक शैली में दर्शाया गया। कहानी जानवरों के एक झुंड के माध्यम से आधुनिक समाज में बढ़ती स्वार्थपरता, संवेदनहीनता और मानवीय मूल्यों के क्षरण पर गंभीर प्रश्न खड़े करती है। नाटक का सबसे प्रभावशाली पक्ष यह रहा कि पशुओं के माध्यम से मानव समाज का ऐसा आईना प्रस्तुत किया गया, जिसने दर्शकों को आत्ममंथन के लिए विवश कर दिया। प्रस्तुति यह प्रश्न उठाती है कि स्वयं को सभ्य कहने वाले समाज और स्वार्थ में डूबे एक झुंड के बीच आखिर कितना अंतर शेष रह गया है। अभिनय की दृष्टि से भी नाटक अत्यंत सशक्त रहा। पवन राठौड़ ने अविनाश एवं बूढ़े व्यक्ति की भूमिका प्रभावशाली ढंग से निभाई। रचना चहर ने रुचि के पात्र को जीवंत बनाया, जबकि हर्षिता राजपुरोहित ने मम्मी और गुड़िया की दोहरी भूमिका में अपनी अभिनय क्षमता का प्रभाव छोड़ा। विपिन प्रीतिमानी बच्चू के किरदार में नजर आए। गौरव देवरा ने बिट्टू तथा अशोक सोमावत ने गबदू की भूमिका निभाई। सृजन पांडे ने वाघमारे, जवान आदमी (कार वाला) एवं गुड्डू की भूमिकाओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। प्रमेन्द्र कच्छावा शिकारे एवं बबलू के पात्रों में दिखाई दिए, जबकि मुकुट बिहारी शर्मा ने गुड़िया के मालिक की भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त राजेन्द्र शर्मा, जितेन्द्र शर्मा, जीवितेश शर्मा एवं मनोज स्वामी सहित अनेक अनुभवी रंगकर्मियों ने अपनी अभिनय प्रतिभा से नाटक को और अधिक प्रभावशाली बनाया। नाटक के संवाद, प्रतीकात्मक दृश्य, पार्श्व संगीत और कलाकारों के जीवंत अभिनय ने दर्शकों को अंत तक बांधे रखा। प्रस्तुति के समापन पर ''प्रेम से हमको जीने दो...'' गीत के माध्यम से दिया गया मानवीय संवेदनाओं का संदेश दर्शकों के मन में गहरी छाप छोड़ गया। कार्यक्रम में उपस्थित दर्शकों, रंगकर्मियों एवं कला प्रेमियों ने नाटक की संवेदनशील प्रस्तुति, उत्कृष्ट अभिनय और सामाजिक सरोकारों से जुड़े संदेश की मुक्तकंठ से सराहना की।